वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2005-2006

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय-सूची
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक रिपोर्ट
(1 अप्रैल, 2005 से 31 मार्च, 2006)

संकल्पना			1
न्यास का निर्माण			2
संगठन			3
सारांश			5
कलानिधि			6
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	6
कार्यक्रम ख	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	10
साँस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार			15
कलाकोश			21
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	21
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	21
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	25
कार्यक्रम घ	:	कलाओं का विश्वकोश	25
कार्यक्रम ङ	:	क्षेत्र-अध्ययन	25
जनपद-सम्पदा			28
कार्यक्रम क	:	मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह	28
कार्यक्रम ख	:	बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ	29
कार्यक्रम ग	:	जीवन-शैली अध्ययन	30

कलादर्शन 35

प्रदर्शनियाँ 35

कार्यशालाएँ एवं संगोष्ठियाँ 39

सार्वजनिक व्याख्यान/चर्चा 40

स्मारकीय व्याख्यान 40

सूत्रधार 42

कार्मिक 42

आपूर्ति एवं सेवाएँ 42

भवन परियोजना समिति 42

समन्वायन 43

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द 44

अनुबन्ध

1. : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (31.03.2006 को) 46

2. : केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य (31.03.2006 को) 48

3. : केन्द्र के अधिकारियों तथा वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची (31.03.2006 को) 49

4. : केन्द्र के वर्ष 2005-06 के प्रकाशन की सूची 51

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

ANNUAL REPORT FOR THE PERIOD

1st April, 2005 to 31st March 2006

Contents

Concept			53
Formation of the Trust			54
Organisation			54
Summary			56
KALĀNIDHI			57
Programme A	:	Reference Library	57
Programme B	:	Cultural Archives	61
Cultural Informatics Lab	:		66
KALĀKOŚA			71
Programme A	:	Kalātattvakośa	71
Programme B	:	Kalāmūlaśāstra	71
Programme C	:	Kalāsamālocana	73
Programme D	:	Encylopaedia of Arts	74
Programme E	:	Area Studies	74
JANAPADA SAMPADĀ			77
Programme A	:	Ethnographic Collection	77
Programme B	:	Multi media Presentation	78
Programme C	:	Lifestyle Studies	78
KALĀDARŚANA			82
Exhibitions			82
Workshop and Seminars			85
Public Lectures/Discussions			86
Memorial Lectures			87

SŪTRADHĀRA 88

Personnel 88

Services and Supply 88

Building Projects Committee 88

Coordination 89

IGNCA - Southern Regional Center 90

ANNEXURES

I : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Board of Trustees (as on 31.3.2006) 92

II : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Members of the Executive Committee (as on 31.3.2006) 94

III : List of officers of the IGNCA, including Senior /Junior Research Fellows in the IGNCA (as on 31.3.2006) 95

IV : List of the IGNCA Publications 98

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक विवरण- 2005-2006

संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक-संरचना और ब्रह्माण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं को भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं- लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा । अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अन्तर्विषयक होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला,मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य।

(3) सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन व सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार -विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं और अन्य विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध, विभिन्न क्षेत्रों के मध्य परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण, एवं नागरिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का, एवं इसी प्रकार भारत की लिखित एवं मौखिक धाराओं के मध्य पारस्परिक आदान-प्रदान का अन्वेषण, अभिलेखन और प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ-16-7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च,1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन एवं पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा। नवम्बर, 2004 में 21 सदस्यों के सेवानिवृत होने तथा 9 नए सदस्यों के मनोनीत किए जाने के साथ ही न्यास का पुनर्गठन किया गया। द्रष्टव्य आदेश संख्या 16-26/2004- यू०एस०(अकादमी) अपि च दो नए सदस्य 2 फरवरी, 2005 को नामज़द किए गए। द्रष्टव्य आदेश संख्या 16-26/2004- (अकादमी)।

दो नए सदस्य 5 मई, 2005 को नामज़द किए गए। द्रष्टव्य आदेश संख्या 16-26/2004-यू०एस०(अकादमी)। 31.03.2006 को न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची अनुबन्ध-1 पर दी गई है।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है। **कलानिधि** इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार और कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह भी हैं।

कलाकोश यह संभाग आधारभूत अनुसन्धान का कार्य करता है। इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला, (ग) भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की शृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनपद-सम्पदा यह संभाग (क) लोक एवं जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ करता है, (ग) भारतीय सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था करता है। इसके साथ-साथ इस संभाग ने (घ) एक बाल रंगशाला स्थापित की है तथा एक (ङ)संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की भी सोच रहा है।

कलादर्शन यह संभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है।

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला 1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना ''स्ट्रेंगथेनिंग'' नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ । इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

सूत्रधार यह संभाग अन्य सभी संभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाता है।

संस्था के शैक्षणिक स्कन्ध अर्थात् कलानिधि एवं कलाकोश अपना ध्यान मुख्यत: बहुविध मूल एवं अनुषंगिक सामग्री के संग्रह पर केन्द्रित करते हैं। ये इसके लिए आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, आकार-आकृति के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य वे सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) एवं निर्वचन (मार्ग)के स्तर पर

इनकी व्याख्या के रूप में करते हैं। जनपद-सम्पदा एवं कलादर्शन, लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुल मिलाकर, चारों संभागों के कार्यक्रम कलाओं को, जीवन एवं अन्य कलेतर अनुशासनों से उनके सम्बन्ध को, वास्तविक सन्दर्भों में प्रस्तुत करते हैं। सभी संभागों की अनुसन्धान, कार्यक्रम-निर्माण व फलावाप्ति की प्रविधियाँ समान हैं। वैसे, हर संभाग का कार्य, अन्य संभागों के कार्यक्रमों का पूरक है।

वर्ष 2005-2006 के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार है।

कलानिधि

कलानिधि- एक राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डाटा बैंक के मुख्य घटक हैं-मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोपिशेज का विशाल संग्रह स्लाइडों का एक ठोस संग्रह, सास्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत दक्षिण एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन/कलानिधि का मूल उद्देश्य अर्न्तविभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्त्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा सांस्कृतिक सूचनात्मक प्रयोगशाला एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षाणिक संस्थानों के शोध कर्त्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेक भाषाओं में हैं। इसमें स्रोत वस्तुओं की संख्या, मुद्रित एवं मुद्रित, 2.4 लाख से अधिक है।

कार्यक्रम - क
संदर्भ पुस्तकालय

31 मार्च 2006 को, संदर्भ पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों की कुल संख्या, 12 भाषाओं में जिनमें विदेशी भाषाएँ भी शमिल हैं, 1,32,318 थीं। विषय सूची के साथ विस्तृत क्षेत्र के ये लगभग 1000 विषयों पर आधारित हैं। इनमें पुरात्त्वशास्त्र, मानवशास्त्र, संरक्षण, संस्कृति, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी, संग्रहालय, साहित्य, रंगमच, सूचना-विज्ञान, दर्शन एवं भाषा-विज्ञान सम्मिलित हैं। पुस्तकालय में श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं श्री निर्मल कुमार बोस जैसे अनेकों श्रेष्ठ व्यक्तियों के संग्रह हैं। इन संग्रहों की पुस्तकें सूची पत्रों के अंश हैं परन्तु वास्तविक रूप से इन्हें एक अनन्य स्थान प्राप्त है।

मुद्रित सामग्री

आलोच्य वर्ष में पुस्तकों के संग्रह में मुद्रित सामग्री के 1798 खण्ड जोड़े गए। इनमें 260 खण्ड खरीदे गए, 388 खण्ड प्रसिद्ध विद्वानों तथा संस्थानों से उपहार स्वरुप प्राप्त हुए, 300 जिल्दबंदी किए हुए पत्रिकाओं के खण्ड तथा 850 प्रकाशन दिल्ली विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त प्रो० विनोद सेन से उपहार स्वरूप प्राप्त हुए।

डॉ० कपिला वात्स्यायन ने कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय को अपना व्यक्तिगत संग्रह प्रदान किया। संग्रहों के स्थानान्तरण का कार्य आरम्भ हो चुका है। पुस्तकालय अब तक पुस्तकों के 61 बक्से अपरिष्कृत विषय शीर्षक के साथ प्राप्त कर चुका है; नौ बक्सों में नृत्य, संगीत एवं रंगमंच पर पत्र पत्रिकाएँ एवं प्रकाशन हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ

पुस्तकालय इस वर्ष 243 शोध एवं तकनीकी पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा। ये मानवशास्त्र, पुरातत्त्वशास्त्र, कला, ग्रन्थसूची, पुस्तक समीक्षा, कंप्यूटर एवं सूचना-विज्ञान, संरक्षण, सार्वजनिक प्रदर्शन कला, लोक-साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषा विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र, दर्शन शास्त्र, कठपुतली, धर्मशास्त्र, समाजविज्ञान, रंगमंच एवं क्षेत्र अध्ययन से सम्बन्धित हैं।

सूचीपत्र तैयार करना, वर्गीकरण करना तदोपरान्त पुस्तकों को पुस्तकालय में शामिल करना, पुस्तकालय के सतत कार्य हैं। वर्ष 2005-2006 में 1290 खण्डों का वर्गीकरण एवं सूचीपत्र तैयार करने का कार्य किया गया था और 1087 अभिलेख ऑन-लाइन कैटलॉग में दर्ज किए गए थे जिससे शोध कर्त्ताओं को पुस्तकों तक पहुँचाना अत्यन्त सुविधाजनक हो जाए। लगभग 1040 खण्डों की जिल्दबंदी की गई।

पुस्तकालय ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से बाहर के 1230 व्यक्तियों को सेवाएँ प्रदान की ; 868 खण्ड, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कर्मचारियों एवं अध्येताओं को जारी किए गए; तथा अन्तर्पुस्तकालय ऋण आधार पर 34 खण्ड उधार लिए गए एवं 124 खण्ड जारी किए गए तथा 50 नए सदस्य बनाए गए।

ग्रन्थ सूची

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एशियन स्टडीज़ का एक सदस्य है जो कि लिदेन विश्वविद्यालय के कर्न इंस्टीट्यूट द्वारा 1926 में स्थापित एनुअल बिब्लियोग्राफी ऑफ दि इंडियन आर्कियोलॉजी का पुर्नजीवित स्वरुप है। आइआइएएस की स्थापना 1997 में भारत, इंडोनेशिया एवं श्रीलंका के शैक्षणिकसंस्थानों एवं विद्यालयों के सहयोग से की गई। इस परियोजना का मूल उद्देश्य बिब्लियोग्राफिक इलेक्टॉनिक ऑन-लाइन डेटा बेस, जो इतिहास, भौतिक संस्कृति, शिलालेख शास्त्र एवं पेलियोग्रैफी, मुद्राशास्त्र एवं सिगिलोग्रैफी जैसे विषयों पर आधारित टीकाकृत अभिलेखों की आपूर्ति करता है, का संकलन करना एवं संभालना है। इस डेटा बेस से निकल कर प्रतिवर्ष एक टीका कृत सूचीग्रन्थ मुद्रित रूप से प्रकाशित की जाती है और इसके साथ ही ए०बी०आइ०ए० इंडेक्स का सी०डी०रोम भी तैयार किया जाता है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय लगभग आरम्भ से ही विभिन्न विषयों पर ग्रन्थ सूची तैयार कर रहा है। ये विद्वानों के संदर्भ हेतु उपलब्ध है।

आलोच्य वर्ष में 292 अभिलेखों को ग्रन्थसूचकों द्वारा पुन:सम्पादित करके ए०बी०आ०ए० श्रीलंका कार्यालय भेजा तथा उसके साथ ही एक प्रतिलिपि एबीआइए इंडेक्स के खण्ड-3 में शामिल करने के लिए लिदेन कार्यालय प्रेषित की गई। ये अभिलेख मुख्यत: पुरातत्त्व, वास्तुकला, शिलालेख एवं प्राचीन कला, इतिहास से सम्बन्धित हैं।

8 वीं एबीआइए कार्यशाला एवं संगोष्ठी 11 से 14 जनवरी 2006 को इंटरनेशनल इँस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़, लिदेन में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० के०के०चक्रवर्ती, कलानिधि विभागाध्यक्ष डॉ० रमेश चन्द्र गौड़, सी०आइ०एल० निदेशक श्री पी० झा एवं बिब्लियोग्राफर श्रीमती आशा गुप्ता ने भाग लिया ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को जनवरी, 2007 से पाँच वर्षों के लिए एबीआइए के लिए समन्वायिक कार्यालय नामांकित किया गया और इस वार्षिक ए०बी०आइ०ए० छ: खण्ड निकालने का तथा वार्षिक कार्यशाला आयोजित करने का एवं अन्य सदस्य देशों से समन्वय स्थापित करने की जिम्मेदारी होगी।

1 अप्रैल, 2005 से 31 मार्च, 2006 तक की अवधि का वार्षिक प्रतिवेदन

वार्षिक प्रतिवेदन
1 अप्रैल, 2005 से 31 मार्च 2006 तक

सारांश

स्थापना के 19 वें वर्ष में, जहाँ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपनी शैक्षणिक गतिविधियों एवं बहुमूल्य स्रोतों से गठन कार्य चालू रखा, राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 80 बंजारें समुदायों के 1500 आदिवासी प्रतिनिधियों की एक सभा आयोजित करके उन्हें भी अपनी गतिविधियों में सम्मिलित किया। पूरे देश से आए हुए आदिवासी समुदायों के सृजनात्मक अभिव्यक्तियों के प्रोत्साहन एवं परिक्षण हेतु अनेकों कार्यशालाएँ भी आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में, कलाकारों द्वारा, तैयार कलाकृतियों को केन्द्र ने अपने अभिलेखागार तथा प्रदर्शनियों के लिए अर्जित कर लिया।

इस वर्ष भी उत्तर-पूर्व भारत, केन्द्र की गतिविधियों का विशेष केन्द्र बना रहा। आलोच्य वर्ष में अनेकों कार्यशालाएँ तथा संगोष्ठियाँ आयोजित की गई ताकि विद्वानों, सामाजिक कार्यकत्ताओं एवं समुदायिक प्रतिनिधियों के बीच संवादों का आदान-प्रदान हो सके।

केन्द्र के साँस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला (सी.आई.एल.)ने संस्कृति एवं कला के प्रलेखन एवं प्रसार के लिए नवीनतम सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने पर, प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग, भारत सरकार द्वारा गोल्डन आइकन एवार्ड फॉर एक्जेम्पलरी इम्पलिमेंटेशन फॉर इ-गवर्नेस इनीशिएटिव नामक पुरस्कार अर्जित किया।

संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों तथा सहयोगों के प्रोत्साहित करने हेतु भारत में विदेशी दूतावासों के सहयोग से, कलादर्शन प्रभाग ने अनेकों प्रदर्शनियाँ आयोजित की।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगात्मक प्रयत्नों के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला ने दो चीनी एवं एक कोरियन प्रतिनिधि मंडल की मेजबानी की तथा सम्भावित क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोगात्मक कार्यों के लिए इनसे विचार-विमर्श किया। केन्द्र ने इण्डो-चीन अध्ययनों पर संयुक्त शोध कार्यों के लिए तैय्यम नार्मल यूनिवर्सिटी के कुलपति के साथ एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर भी किए।

आलोच्य वर्ष में केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के प्रतिवेदन इस प्रकार से हैं:-

प्रतिलिपिकरण

पुस्तकालय का यह प्रभाग, देश के विभिन्न पुस्तकालयों में मौजूद पाण्डुलिपियों के माइक्रोफिल्म तैयार करने का कार्य करता है। माइक्रोफिल्म की प्रमुख कुण्डली एवं एक प्रतिलिपि स्रोत पुस्तकालय को दी जाती है एवं एक प्रतिलिपि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में रखी जाती है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारत तथा विदेशों में मौजूद सभी अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का एक माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश पुस्तकालय विकसित करने की योजना बना रहा है। इस दीर्घावधिक कार्यक्रम में सभी सार्वजनिक एवं निजी पुस्तकालयों को शामिल किया जाएगा। दरबार लाइब्रेरी नेपाल; द स्टॉस बिब्लियोथिक, बर्लिन; द बिब्लियोथिक नेशनल, फ्रांस एवं ब्रिटिश लाइब्रेरी, यू०के० संग्रहों से चुनिन्दा माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिशेज को अर्जित करने का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। आइएएसडब्ल्युआर कार्यक्रम के अन्तर्गत तिब्बत संग्रह एवं अन्य संस्कृत पाण्डुलिपियाँ जो पहले से ही माइकोफिल्म/ माइक्रोफिश के रूप में प्राप्त है अर्जित कर ली गई है।

इस समय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माइक्रोफिश संग्रहों में माइक्रोफिश के रूप में शोध पत्रिकाओं के पुराने खण्डों का विशाल संग्रह हैं। इनमें प्रमुख हैं -ब्रिटिश बर्मा गज़ेटियर; बुलेटिन डि ले एकोल फ्रेनकाएस एक्स्त्रीम ऑरिआंत; जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एवं न्यू इंडिया एन्टीक्वेरी।

माइक्रोफिल्मिंग परियोजना (बाह्य)

आलोच्य वर्ष में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की विभिन्न परियोजनाओं में 4354 पाण्डुलिपियों एवं 3,04,860 पत्रों पर आधारित 491 माइक्रोफिल्म कुण्डलियाँ तैयार की गईं। प्रगति का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार से है।

परियोजना	परियोजना आरम्भ करने की तिथि	पत्रों की संख्या	भाषा/विषय	उक्त तिथि को पाण्डुलिपियों की संख्या
गवर्नमेंट ओरिएंटल लाइब्रेरी चेन्नई	10.9.89	210	संस्कृत/तेलगु, देवनागरी पुराण, शास्त्र, अंलकार	49975
राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, अलवर	22.04.04	07	संस्कृत / देवनागरी ज्योतिष, वेद, साहित्य	8500
डॉ० यू०वी०एस० चेन्नई	3.09.98	38	तमिल/ पुराण, खगोल, व्याकरण, औषधि	3550

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रयासों से निम्नलिखित नई परियोजनाएँ प्रान्तीय राज्यों द्वारा अनुमोदित की गई एवं आने-वाले वर्षों में माइक्रोफिल्मिंग के लिए ली जाएगी।

राजस्थान सरकार द्वारा अनुमोदित परियोजनाएँ

1. राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान, जयपुर 2. राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान, कोटा, 3. राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान, बीकानेर, 4. राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान, उदयपुर, 5. राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान, चित्तौड़ गढ़, एवं 6. राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान,भरतपुर।

असम सरकार द्वारा अनुमोदित परियोजनाएँ

1.कामरूप अनुसन्धान समिति, गुवाहाटी 2. द इंस्टीट्यूट ऑफ एंटीक्वेरियन स्टडीज़, गुवाहाटी 3. गुवाहाटी यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, गुवाहाटी एवं 4. असम स्टेट म्यूज़ियम, गुवाहाटी।

माइक्रोफिश

सामग्री आदान-प्रदान समझौते के अन्तर्गत आइएनआइओएन, रशिया से 450 माइक्रोफिशेज़ प्राप्त की गई।

स्लाइड्स एवं फोटोग्राफ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने निम्नलिखित संग्रहालयों के फोटो प्रलेखन का कार्य किया तथा उन्हें स्लाइड संग्रह में जोड़ा ।

1. एस०पी०एस० म्यूज़ियम, श्रीनगर 2. सेन्ट्रल एशियन म्यूज़ियम, श्रीनगर 3. अमर महल म्यूज़ियम, जम्मू 4. डोगरा आर्ट म्यूज़ियम, जम्मू तथा 5. मथुरा स्टेट म्यूज़ियम, मथुरा । उपर्युक्त संग्रहालयों में रखे हुए संग्रहों के 819 फोटो निगेटिव्स बनाकर इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में रखे गए तथा एस०पी०एस० म्यूज़ियम, हिमाचल टेम्पलस (परबती घाटी) एवं मथुरा स्टेट म्यूज़ियम, मथुरा में दर्शनार्थ रखी हुई कला वस्तुओं के 188 स्लाइड्स तैयार किए गए।

संरक्षण प्रयोगशाला

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास एक पूर्ण रूप से सज्जित संरक्षण प्रयोगशाला है जो केन्द्र के संग्रहों के संरक्षण एवं मरम्मत का कार्य करता है। यह धरोहर वस्तुओं के प्रबन्ध पर जागरूकता कार्यक्रम तथा प्रारंभिक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संरक्षण प्रयोगशाला दिल्ली क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (एन०एम०एम०)के लिए नामांकित पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र है।

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित संरक्षण कार्य किए गए :

1. राम शरण त्रिपाठी संग्रह पाण्डुलिपियों के 200 पृष्ठ ।
2. महावीर जैन लाइब्रेरी, चांदनी चौक, दिल्ली से प्राप्त 500 पाण्डुलिपियाँ ।
3. मार्ग पत्रिका के दो विशेषांक (खण्ड 9, न०1-4, 1944-56; खण्ड 15 न० 1-4, 1961-62)
4. 1923 में मुद्रित फ्रांसीसी पुस्तक डेर इण्डिशे कुल्तुरक्रीज़ के 200 पृष्ठ ।

5. प्रो० विनोद सेन द्वारा उपहार स्वरूप दी गई दो पुस्तकें ठीक की गईं ।

6. जनपद-सम्पदा प्रभाग के संग्रह में से सभी कीट ग्रस्त मुखौटे ।

7. साँस्कृतिक अभिलेखागार के दो लकड़ी के संगीत उपकरण ।

8. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय के रूसी संग्रह जो आंशिक रूप से आग से खराब हो गए थे।

9. साँस्कृतिक अभिलेखागार से कलमकारी सामग्री।

10. भारत की भूत पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का प्रकाशचित्र।

11. पाण्डुलिपि पृष्ठों को सुरक्षित रखने के लिए अम्ल रहित माउंट बोर्ड के प्रदर्शन हेतु बक्से बनाए गए ।

भाषा भवन पटियाला के कर्मचारियों को पाण्डुलिपि संरक्षण में प्रशिक्षण हेतु संरक्षण प्रयोगशाला के दो कर्मचारियों ने पटियाला का दौरा किया। अगस्त 2005 के प्रथम सप्ताह में, युनेस्को तथा कोरिया सरकार के विशेषज्ञों के एक दल ने संरक्षण प्रयोगशाला की गतिविधियों का प्रलेखन किया।

कार्यक्रम - ख

साँस्कृतिक अभिलेखागार

साँस्कृतिक अभिलेखागार में विभिन्न शैलियों से सम्बन्धित सामग्रियों, मौलिक एवं अनुलिपिक को एकत्रित, वर्गीकरण तथा कैटलॉग किया जाता है। अभिलेखागार को व्यक्तिगत संग्रहों, नृतत्त्वशास्त्र संग्रहों के प्रलेखन एवं साँस्कृतिक आदान-प्रादान से समृद्ध किया जाता है। पिछले दस वर्षों में बहुत से विद्वानों, कलाकारों एवं कला प्रेमियों ने सावधानी एवं लगन से अपने रुचि के विभिन्न विषयों जैसे साहित्य एवं व्यक्तिगत इतिहास, गायन, चित्रकला, लोक परम्परा के संगीत एवं जाति-सम्बन्धी कलाओं पर सामग्री एकत्रित की। नृतत्त्वशास्त्र एवं श्रव्य-दृश्य प्रलेखन के दुर्लभ संग्रहों में से कुछ को साँस्कृतिक अभिलेखागार द्वारा अर्जित किया गया।

इस वर्ष, राजा दीनदयाल संग्रह एवं 3500 श्वेत-श्याम छाया चित्रों का डिजिटीकरण किया गया।

प्रलेखन

श्रव्य/दृश्य

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र आरम्भ से ही जीवन शैलियों,धर्म सम्बन्धी गतिविधियों समुदायों एवं वरिष्ठ व्यक्तियों के साथ साक्षात्कारों के प्रलेखन का कार्य कर रहा है। इस वर्ष में बंजारों एवं कम जाने जाने वाली कृतियों के विभिन्न पहलुओं पर प्रमुख प्रलेखन कार्य किया गया। इसने साँस्कृतिक निरन्तरता के संदर्भ में भारत के अमूर्त साँस्कृतिक धरोहर के सम्पूर्ण विस्तार को अपनी परिधि में लिया । श्रव्य-दृश्य एकक में एक पूर्णरूप से सूचीपत्रित पुस्तकालय है जो आन्तरिक एवं बाह्य उपयोगकर्त्ताओं के लिए उपलब्ध है।

जीवन शैलियों पर अध्ययन करना जनपद-सम्पदा की गतिविधियों का एक प्रमुख अंग है। निम्नलिखित प्रलेखन मुख्यत: इस कार्यक्रम का समर्थन करते हैं।

1. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित नेशनल कन्वेंशन ऑफ नोमैड्स एण्ड आदिवासीज़ के दौरान बंजारा समुदाय से 26 साक्षात्कार लिपिबद्ध किए गए ताकि उनके मौखिक विवेक जो उनके विभिन्न गीतों एवं त्योहारों के साथ-साथ उनकी बहुमुखी जीवन शैली, बोली, भौगोलिक स्थिति, पारिस्थितिक बुद्धिमत्ता, मौखिक पौराणिक कथाओं तथा उनके देवियों एवं देवताओं से सम्बद्ध है। इसके अतिरिक्त, 52 बंजारे/आदिवासी समुदाय के पारम्परिक अभिनयों को, उनकी ध्वनि के साथ, प्रलेखित किया गया जिससे उनके अभिनयों के संदर्भ एवं विषय की गहराई को मापा जा सके।

2. खरीफ ऋतु के दौरान छत्तीसगढ़ के आदिवासी/ग्रामीण लोगों द्वारा मनाए जा रहे उत्सव का सटीक श्रव्य-दृश्य प्रलेखन किया गया जिससे उनकी मौखिक परम्पराओं एवं विश्वासों का प्रकाशन हो सके।

3. शरीर पर गोदना या टेटू करना आज भी आदिवासियों में जीवन्त धरोहर के रूप में मौजूद है, हालांकि मूल संकल्पनाओं एवं बदलते हुए समय के संदर्भ में इसका मूल अर्थ विस्मृत होता जा रहा है। इसको मापने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने पहले उज्जैन में इस विषय को प्रलेखित किया तदुपरान्त छत्तीसगढ़ क्षेत्र में इसे और विकसित किया । गोदना की संरचना अधिकतर पंथ विशिष्ट होती है तथा यह पथ विशेष व्यक्तित्व एवं आपसी सम्बन्धों के मौखिक ज्ञान से पहचानी जाती है। प्रलेखन ने 32 सबसेट्स को लिपिबद्ध किया। इसमें गोदना करके भी दिखाया गया जिससे उसके दर्द एवं आनन्द दोनों की अनुभूति प्राप्त हो सके।

4. लोक अस्मिता की प्रतीकात्मकता - प्रतीकवाद की खोज में, विभिन्न बंजारों, आदिवासी एवं ग्रामीण अस्मिताओं, जिनका व्यक्तित्व उनकी पगड़ियों से वर्णित होता है, को प्रलेखित किया गया। यह कार्यक्रम विभिन्न प्रकार की पगड़ियों उनको बांधने की तकनीक, आकार एवं उसके पीछे छुपा हुआ रहस्य या कुल अस्मिता जो मौखिक रूप से समझा गया तथा पालन किया जाता रहा है, को लिपिबद्ध करने के लिए आरम्भ किया गया । इस कार्य के लिए सर्वप्रथम महाराष्ट्र एवं राजस्थान को लिया गया। यह द नॉव के नाम से जाने जानी वाली परियोजना इस अगोचर धरोहर के सम्पूर्ण विस्तार को तथा बदलते हुए समय के अनुसार इसके प्रतिबिम्ब को मापने के लिए आगे बढ़ाई जाएगी।

आलोच्य वर्ष में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत की लोक परम्पराओं पर अनेकों सम्मेलन आयोजित किए तथा पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। यह नृत्य, नृत्य-नटिकाओं, समवंत-नृत्य, कथा वाचन परम्परा एवं हस्त शिल्प पर आधारित थे। इस अध्ययन क्षेत्र में निम्नलिखित प्रलेखन किए गए:-

5. कर्नाटक के तटवर्ती के उत्तरी कनारा जिले के कृष्ण हास्यगार द्वारा प्रदर्शित थेनकातिथु यक्षगान का प्रसिद्ध महाकव्यों को लोक तत्त्वों के ताने-बाने में चित्रित करने की परम्परा को उजागर करते हुए

विस्तृत प्रलेखन किया गया। वार्ता के प्रकरण में यक्षगान के क्षेत्र में बदलते हुए आधुनिक समय के अतिक्रमण को भी सम्मिलित किया गया है।

6. गोंडालियाज - भौगोलिक रूप से महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के ग्रामीण परिदृश्य में स्थित गोंडालिया समुदाय है, ने पवित्र भजन गायन परम्परा को अभी भी सम्भाल रखा है। प्रलेखन ने मौखिक पौराणिक कथाओं, सुरीली ध्वनि एवं देशी संगीत साधनों को सम्मिलित किया। इसके साथ, महाराष्ट्र के मुख-वीणा को पारम्परिक संगीत पद्धति एवं उनके ध्वनि कंपन की समझ को विस्तार के रूप में लिपिबद्ध किया। यह सब, अन्ततोगत्वा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आदि श्रृव्य गैलरी में उपयोग की जाएँगी।

7. भारत के विभिन्न भागों में महाराष्ट्र पर किए गए 16 लोक शास्त्रीय अभिनयों को समझने के लिए एएक मेगा मल्टी-कैमरा डिजिटल प्रलेखन किया गया। प्रलेखन में जिन्हें उजागर किया गया वह हैं- डांडिया रास लीला से भारतनाट्यम तक; यक्षगान शैली में कठपुतली नाच से पांडवाणी तक; रुक्मिणी कल्याणम से असम के सत्रीय लोक नृत्य तक इत्यादि । उजागर की गई तथ्यों में भारत के महाभारत विधान परम्परा के विस्तृत तन्तुओं की सीमा के अन्दर अतुलनीय वस्त्र, सोच-विचार एवं देशी सकंल्पनाओं के अन्तस्सम्बन्ध सम्मिलित हैं।

8. डॉ० मधु मुखर्जी द्वारा बंगाल के गौड़िय नृत्य परम्परा के प्रदर्शन से बंगाल की ग्रन्थ परम्परा में सराबोर नृत्य एवं मूर्तिकला की पारस्परिक क्रियाओं की दोबारा खोज हुई। इस प्रदर्शन ने अपने आप को पौराणिक प्रकरण तक ही सीमित रखा फिर भी इसने बंगाल के मंदिरों की वास्तुकला की दिवारों से पिघलाएँ हुए सैकड़ों वर्ष पुरानी परम्परा को क्रमबद्ध किया। एक विस्तृत साक्षात्कार गौडीय नृत्य के साथ विभिन्न सम्बद्ध शैक्षणिक संदर्भों,के विषय पर अध्ययन को उजागर करता है।

9. बंगाल के आगोमनी अभिनय को जो कि देवी माता उमा के चित्त में भगवान शिव की ओर से हो रही उधेड़ बुन को प्रकरण के रूप में दर्शाता है, प्रलेखित किया गया । अभिनय ने आधुनिक नाट्यकला के साथ मिश्रित लोक नृत्य परम्परा के चौड़े वर्णपट के सीमा के अन्दर,समय एवं प्रकरण के समन्वय के वयान की सृष्टि की।

10. सुई धागा- एक सम्मेलन एवं कार्यशाला पर विस्तृत प्रलेखन किया गया। यह प्रलेखन सुई एवं धागे के माध्यम से देखे गए एवं महसूस किए गए एशियाई यथार्थ-चित्रण की कला को दर्शाता है। ईरान, अफगानिस्तान से बांगलादेश तक एवं वियतनाम इत्यादि का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्रियों के विस्तृत साक्षात्कार को, उनके सृजनात्मक कार्यों को उनकी उदात्त कलाओं एवं उनके चित्र के प्रतिबिम्बों की खोज करते हुए समकालीन संसार द्वारा पुकारे गए भावनात्मक लेप के एक तत्त्व के साथ प्रलेखित किया गया ।

युनेस्को द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता

लगातार दूसरी बार अन्तर्राष्ट्रीय युनेस्को मंच समिति ने रामलीला को अगोचर साँस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान की । यह ऑडियो/विजुअल प्रलेखन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अंतर्विभागीय

थी । वर्ष 2004-2005 में मानवता के मौखिक एवं अमूर्त्त धरोहर की युनेस्को की तृतीय घोषणा के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निर्मित्त वैदिक उच्चारण विषयक एक फिल्म को मान्यता प्राप्त हुई। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भंडार में रामलीला परम्परा के विभिन्न शैलियों पर एक तीन घंटे की विस्तृत व्याख्यापूर्ण प्रलेखन मौजूद हैं।

प्रख्यात विद्वानों से साक्षात्कार

श्री आनन्द कृष्ण, एक प्रसिद्ध विद्वान जिन्होंने पवित्र शहर वाराणसी पर गहन अध्ययन किया है, के साथ एक 90 मिनट का साक्षात्कार लिपिबद्ध किया गया।

स्वतन्त्रता सेनानी, दार्शनिक एवं पंडित मदन मोहन मालवीय तथा गाँधी जी के निकट सहयोगी प्रो० मेहश मिश्र का डॉ० राजीव मालवीय द्वारा साक्षात्कार किया गया। तीन घंटे का यह साक्षात्कार स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान् नेताओं के जीवन के साथ अतीत की स्मृति को लिपिबद्ध करता है।

लघु फिल्म

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कुछ पहले से उपलब्ध फुटेज तथा कुछ नई चित्र सामग्रियों की सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों के लिए इन सर्च ऑफ इंडियन जीनियस शीषर्क से एक फिल्म बनाई। जैसाकि शीर्षक से ही स्पष्ट है। इस फिल्म में बहुमुखी भारतीय चिन्तन एवं सभी कलाओं पर आधारित रचनाओं को दर्शाया गया है। इस फिल्म ने ग्रंथ सम्बन्धी धरोहर की गहराई को मापने के लिए पाण्डुलिपियों को आधार बनाया तथा शास्त्रीय से लोक एवं आदिवासी संसार की प्रगतिशील मौखिक परम्पराओं को शामिल किया है। एक अन्य स्तर पर इसने हड़प्पा संस्कृति से हम्पी संस्कृति तक के सृजनात्मक स्पन्दनों को प्रतिबिंबित किया है।

प्रसार

ऑडियो विजुअल प्रलेखन नियमित रूप से किए गए तथा आलोच्य वर्ष में डी०डी०भारती द्वारा हस्तांतरित किए गए एक घंटे की अवधि के 13 उपाख्यान दूरदर्शन को भेजे गए । भावी प्रसारण के लिए नए समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। डी०वी०डी०/वी०सी०डी० को विभिन्न संस्थानों में भेजा गया। अनेकों देशी एवं विदेशी विद्वानों ने विशेष प्रलेखनों को देखने के लिए ऑडियो/विजुअल पुस्तकालय का प्रयोग किया।

फोटोग्राफी

यह प्रभाग नियमित रूप से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी कार्यक्रमों के फोटो प्रलेखन का कार्य करता है। यह फोटोग्राफ प्रेस जन प्रचार, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की समाचार पत्रिका विहंगम तथा अन्तर्विभागीय विद्वानों तथा प्रभागों के लिए सर्वदा उपलब्ध रहते हैं।

कार्यशाला/सम्मेलन/सभाएँ

1. 26 अप्रैल से 6 मई, 2005 तक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के सहयोग से पाण्डुलिपि संरक्षण में प्रशिक्षण हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गई।

2. पुस्तकालय विज्ञान के पुरोधा एस०आर० रंगनाथन के 113 वें जन्म दिवस पर 18 अगस्त, 2005 को संदर्भ पुस्तकालय ने प्रथम एस०आर०रंगनाथन स्मारक व्याख्यान आयोजित किया । व्याख्यान संयुक्त रूप से प्रो० एस०अंसारी, भूतपूर्व निदेशक, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली एवं प्रो० पी०बी०मांगला,भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना प्रभाग तथा डीन, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया।

3. 7 से 11 नवम्बर, 2005 को नेशनल रिसर्च लेबोरेट्री फॉर कन्जर्वेशन ऑन कल्चरल प्रापर्टी, लखनऊ के सहयोग से केयर एण्ड कंजर्वेशन ऑफ फोटो एण्ड रिप्रोग्रैफिक मेटीरियल पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

कलानिधि दिवस

2 फरवरी, 2006 को कलानिधि प्रभाग का वार्षिक दिवस मनाया गया । इस अवसर पर बसन्त पंचमी की महत्ता पर वरिष्ठ रिप्रोग्रैफी सहायक, श्री आनन्द द्विवेदी ने एक व्याख्यान दिया, सुश्री जयंती ईश्वरपुरी ने कथक पर व्याख्यान-प्रदर्शन किया, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के श्री गगन जॉन ने कविता पाठ किया तथा सुश्री हेमा काजी एवं उनके दल ने कश्मीरी लोक गीत का गायन किया। डॉ० एच०के कौल, निदेशक, डैलनेट के मुख्य अतिथि थे ।

अन्य गतिविधियाँ

कलानिधि के सदस्यों ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के लिए पाण्डुलिपियों के सही स्थान का पता लगाने के लिए दिल्ली एवं आस-पास के शहरों के सर्वेक्षण में भाग लिया । संदर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध व्यक्तिगत संग्रहों की एक विस्तृत सूची एवं स्टेटस रिर्पोट तैयार की गई।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र संदर्भ पुस्तकालय में प्राप्त पत्र पत्रिकाओं के उपयोग पर सर्वेक्षण कार्य आरम्भ किया गया । संदर्भ पुस्तकालय में पुस्तकों को पुन: व्यवस्थित एवं आयोजित किया गया । पुस्तकों का प्रत्यक्ष सत्यापन का कार्य भी किया गया ।

नेटवर्किंग

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने, देश एवं विदेश में अनेकों संगठनों, जिसमें विश्वविद्यालय तथा शोध एवं साँस्कृतिक संस्थान शामिल हैं, के साथ एक विस्तृत नेटवर्क स्थापित किया है। इस वर्ष, जम्मू विश्वविद्यालय, नेशनल आर्काइव्ज़ स्कूल तथा सागर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने कलानिधि का दौरा किया। हमदर्द विश्वविद्यालय तथा जामिया-मिलिया इस्लामिया के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के साथ पारस्परिक मेल-जोल बढ़ाया गया। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया एवं विमेन पॉलीटेकनिक, महारानी बाग, नई दिल्ली के तीन पुस्तकालय प्रशिक्षार्थियों ने पुस्तकालय में व्यावहारिक प्रशिक्षण लिया। 10 जनवरी, 2005 को, नेशनल हाइड्रोलिक पावर कार्पोरेशन (एन०एच०पी०सी०) फरीदाबाद के क्षेत्रीय पुस्तकालयों के 15 पुस्तकालयाध्यक्षों के एक दल ने कलानिधि का दौरा किया।

कलानिधि प्रभाग में सेवाओं को और सुचारू बनाने के लिए संदर्भ पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों को एक कंप्यूटर इंटरनेट कनेक्शन के साथ उपलब्ध कराया गया है।

साँस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार

1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना स्ट्रेंगथेनिंग नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ। इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के वर्चुअल पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

साँस्कृतिक प्रलेखन तथा कला विषयों एवं सूचना प्रौद्योगिकी के बीच संवाद स्थापित करने प्रभृति क्षेत्रों में इस परियोजना ने क्रान्तिकारी कदम उठाए हैं । इससे नवीन प्रौद्यौगिकी के प्रयोग, विकास एवं प्रदर्शन के नए द्वार खुले हैं।

परियोजना में उच्च स्तरीय बहुमाध्यमिक सामग्री-निर्माण हेतु नए संरचना-मॉडल्स, विकास-प्रक्रियाओं तथा पुन:-अनुप्रयोज्य सॉफ्टवेयर टूल्स की संकल्पना, विकास एवं अनुप्रयोग किया गया है। यूएनडीपी परियोजना परिपूर्ण होने के बाद इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास ने सरकारी एवं सहयोगी परियोजनाओं तथा अन्य संस्थाओं से दल द्वारा अर्जित धन राशि से साँस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार के कार्यकलापों को जारी रखने का निर्णय लिया है। सी०आइ०एल० की मुख्य गतिविधियों में केन्द्र द्वारा पूरी की गई परियोजनाओं पर आधारित सांस्कृतिक सूचना का, नई कला प्रौद्यौगिकी की सहायता से प्रचार-प्रसार, अन्तर्विभागीय सी०डी०रोम परियोजना का वितरण एवं वेबसाइट सम्मिलित हैं।

प्रभाग की गतिविधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है:-

- प्रायोजित परियोजनाएँ
- अन्तर्विभागीय सी डी रोम परियोजनाएँ
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट
- सी०आई०एल० की सहायक गतिविधियाँ
- कार्यशालाएँ /गोष्ठियों का आयोजन/ में उपस्थिति
- विचाराधीन नई परियोजनाएँ

आलोच्य वर्ष में संस्कृति के लिए तकनीकी अनुप्रयोग के क्षेत्र में सी०आई०एल० द्वारा किए गए कुछ प्रमुख कार्य निम्नलिखित है:-

कार्यक्रम - क: प्रायोजित परियोजनाएँ

कलासंपदा: डिजिटल लाइब्रेरी-रिसोर्सिज़ ऑफ इंडियन कल्चरल हैरिटेज (डी०एल०-रिच)

यह परियोजना संचार एवं सूचना प्रौद्यौगिकी मंत्रालय (एम०सी०आई०टी०) के द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी इनीशियेटिव(डी०एल०आई०)-भारत के अन्तर्गत प्रायोजित की गई है। इस परियोजना का उद्देश्य

इ०गा०रा०क०केन्द्र में मौजूद सांस्कृतिक धरोहर का एक डेटा बैंक विकसित करना है। यह प्रणाली सरल, सूचनाप्रद है एवं विषय सूचियों का डिजिटल भण्डार है। कलासम्पदा, विद्वानों के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मौजूद एक लाख से अधिक पाण्डुलिपियों एवं स्लाइड्स हजारों दुर्लभ फोटोग्राफ्स, ऑडियो एवं वीडियो के साथ उच्च शोध प्रकाशनों को एक ही माध्यम से देखने तथा पहुचाने के लिए सुगमता प्रदान करेगा। यह भारतीय कला एवं संस्कृति के एकबद्धता के साथ, अध्ययन में नया आयाम देगा । साथ ही प्रत्येक माध्यम को उचित महत्ता भी प्रदान करेगा। ज्ञान पर आधारित ऐसी उत्पत्ति विद्वानों को बहुस्तरों में रखे हुए ज्ञान को खोजने एवं चित्रण करने सहायक होगी।

आलोच्य वर्ष में डिजिटाइज़ की गई वस्तुएँ इस प्रकार हैं:-

-	पाण्डुलिपियाँ	40 लाख पृष्ठ
-	फोटोग्राफ	4000 (राजा दीन दयाल संग्रह)
-	श्रव्य/दृश्य	600 घंटे

डिजिटिकरण के बाद के सम्पादन एवं एकीकरण का कार्य प्रगति पर है।

इस परियोजना ने वर्ष 2004 के लिए डिपार्टमेंट ऑफ एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स एण्ड पब्लिक ग्रिवेंसेज़, भारत सरकार द्वारा बेस्ट डाकुमेंटेड नालेज एण्ड केस स्टडीगोल्डन आइकन एवार्ड फॉर एक्ज़ेम्पलरी इम्पलिमेंटेशन फॉर इ-गवर्नेस इनिशीयेटिव प्राप्त किया ।

संचार एवं सूचना प्रौद्यौगिकी मंत्रालय (एम०सी०आई०टी०)से प्राप्त परियोजना अनुदान सितम्बर 2005 तक के लिए उपलब्ध था। हालांकि एम०सी०आई०टी० द्वारा दिया गया निश्चित लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण कर लिया गया है, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र उपभोक्ताओं की मांग को पूरा करने के लिए कार्य आगे चालू रखेगा।

कॉइल-नेट (कन्टेंट क्रिएशन एण्ड आई टी लोकलाइज़ेशन-नेटवर्क)

संचार एवं सूचना प्रौद्यौगिकी मंत्रालय द्वारा प्रायोजित यह परियोजना ''सांस्कृतिक धरोहर डिजिटल पुस्तकालय'' पर हिंदी भाषा में वेबसाइट विकसित करने के लिए है, जो विशेष रूप से हिन्दी भाषी क्षेत्रों पर मुख्यत: उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड एवं राजस्थान पर केन्द्रित है।

विषय-विशेषज्ञों/शोधकर्त्ताओं एवं संबंधित क्षेत्र के विद्वानों द्वारा विषय-सूची तैयार की जा रही है, इसके अन्तर्गत जन की सामान्य धरोहर, काव्य एवं साहित्यिक धरोहर, वास्तुगत धरोहर, प्राकृतिक धरोहर एवं उन क्षेत्रों से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ मुख्य विषय हैं। परियोजना के लिए जो विषय सूची (पाठपरक एवं दृश्य) जोड़ी गई है वह हैं 10,000 से अधिक पाठपरक पृष्ठ, 5000 से अधिक छवियाँ तथा 100 घंटों की श्रव्य एवं दृश्य सामग्री यह परियोजना पूर्ण हुई और वेबसाइट को टी०डी०आई०एल० की साइट डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु डॉट आई जी एन सी ए डॉट गर्व डॉट इन कॉइलनेट/आई० जी० एन० सी० ए०/ वैलकम/ पर डाला गया। अंतर्क्रियात्मकता बढ़ाने के लिए ज़ूम टूल्स, शो ऑल इमेजेज़, स्लाइड शो, व्यू डिजिटल इमेजेज़, इ-ग्रीटिंग, हॉटस्पाट व्यूअर, कोगनिटिव मैप जैसे सॉफ्टवेयर उपकरणों का विकास

किया गया। यह उपकरण टीडीआईएल डाउनलोड वर्ग के अन्तर्गत संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वेबसाइट पर डाउनलोडिंग हेतु उपलब्ध हैं।

परियोजना सफलतापूर्वक नवम्बर 2005 में पूर्णप्राय: हुआ। परियोजना समाप्ति वृत्तांत लेखा परीक्षण के साथ तैयार किया गया एवं अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया गया।

यूनेस्को की भारत की साँस्कृतिक मैपिंग परियोजना

यूनेस्को के साँस्कृतिक उद्योगों एवं स्वत्वाधिकार नियमों तथा साझेदारी कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत की साँस्कृतिक मैपिंग पर एक सर्वेक्षण परियोजना पूर्ण की गई। प्रतिवेदन मार्च 2006 में यूनेस्को को सौंपा गया।

नेशनल म्यूज़ियम इंस्टीट्यूट के लिए वेबसाइट विकसित करना

नेशनल म्यूज़ियम इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के लिए वेबसाइट के विकास का कार्य आरम्भ कर दिया गया है जिसे 28 अप्रैल 2006 को एनआईसी की साइट पर डाल दिया जाएगा।

डिजिटाइज़ेशन परियोजना

पाण्डुलिपियाँ

ओरिएंटल रिसर्च लाइब्रेरी, श्रीनगर: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (एनएमएम) की ओर से प्रथम चरण (वर्ष 2004-2006)में 1406 पाण्डुलिपियों के छ: लाख पृष्ठों के डिजिटाइज़ेशन का कार्य ओरिएंटल रिसर्च लाइब्रेरी श्रीनगर में किया गया। जिन पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण किया गया उनमें संस्कृत एवं फारसी भाषा में योगवसिष्ट, महाभारत, शैव-दर्शन, तथा आयुर्वेद इत्यादि सम्मिलित हैं। परियोजना का दूसरा चरण जुलाई 2006 में आरम्भ होगा जिसमें ओआरएल श्रीनगर की सभी पाण्डुलिपियों को डिजिटाइज़ किया जाएगा।

नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली

साँस्कृतिक साँयन्त्रिक संचार, नेशनल म्यूज़ियम इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में मौजूद पाण्डुलिपियों के डिजिटाइज़ेशन में व्यस्त है। वर्ष 2005-2006 में तीन सौ पाण्डुलिपियों डिजिटाइज़ की गईं।

जलियाँवाला नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट, अमृतसर

माइक्रोफिल्मिंग, फोटोग्राफी एवं डिजिटाइज़ेशन से युक्त दृश्य प्रलेखन सम्मिलित है एवं इन तीन माइक्रोफिल्म रोल्स (1446 फ्रेम्स), 205 स्लाइड्स एवं दो डीवीडी बनाकर जलियाँवाला नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट, अमृतसर को दिया गया। प्रलेखन की प्रतिलिपि संदर्भ के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में उपलब्ध है।

लाल बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली के लिए फोटोग्राफ

लाल बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली के लगभग 200 फोटोग्राफ का डिजिटाइज़ेशन एवं सम्पादन किया गया जिससे इन छवियों को पोस्टर आकार में छाप कर लाल बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट की गैलरी में लगाया जा सके। इनकी प्रतिलिपियाँ भी संदर्भ के लिए इ०गा०रा०क०केन्द्र में उपलब्ध है।

राष्ट्रीय संग्रहालय की हड़प्पा दीर्घा का वाकथ्रू सीडी रोम

आलोच्य वर्ष में यह परियोजना भी पूर्ण हुई तथा जुलाई, 2005 में मास्टर सीडीरोम राष्ट्रीय संग्रहालय को सौंपा गया।

कार्यक्रम ख- अन्तर्विभागीय सीडीरोम परियोजनाएँ

अजन्ता : एन इण्टरएक्टिव मल्टीमीडिया एण्ड वर्चुअल वाकथ्रू सीडी रोम

अजन्ता पर बनी यह सीडी-रोम भारत के एक प्रमुख धरोहर स्थल अजन्ता जो यूनेस्को की विश्व दाय स्मारकों सूची में है, पर विस्तृत ज्ञान एवं दृश्य अनुभव देने की एक कोशिश है। सीडी-रोम में सभी गुफाओं का वर्चुअल वॉकथ्रू,जातक एवं अन्य बौद्ध कथाओं का वर्णन, लगभग एक घंटे का परिचयात्मक विडियो, लगभग 1500 सचित्र छवियाँ, विद्वानों के लेख, ग्रंथसूची, शब्दावली आदि हैं। डिजिटल तकनीक का लाभ उठाते हुए खोज की सुविधा भी दी गई है ताकि सीडी में उपलब्ध सामग्री को, उनके प्रारूप को बिना विचारे, देखा जा सके। तकनीकी दृष्टि से यह वेबसाइट एक चुनौती भरा कार्य है क्योंकि समय की मार के चलते, ये गुफाएँ अस्तित्व के संकट में हैं।

सीडी रोम का विमोचन 30 नवम्बर, 2005 को इन्दिरा गाँधी राष्टीय कला केन्द्र न्यास की अध्यक्षा डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा किया गया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बिक्री पटल पर यह सी डी 300 रु० के मूल्य पर उपलब्ध है।

अन्य बहुमाध्यमिक परियोजनाएँ

निम्नलिखित परियोजनाएँ पूर्ण होने के विभिन्न स्तरों पर हैं:-

1. देवनारायण : राजस्थान की एक मौखिक परम्परा पर सीडी रोम।
2. टू पिलग्रिम्स: एलिजाबेथ सॉस एवं एलिजाबेथ ब्रुनर्स की जीवनी एवं रचनाएँ
3. गीत-गोविंद।

कार्यक्रम - ग

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट (डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु डॉट आईजीएनसीए डॉट जीओवी डॉट इन)

1. आलोच्य वर्ष वेबसाइट पर निम्नलिखित अपलोड की गई :-

- पाण्डुलिपियों, स्लाइड्स, पुस्तकों श्रव्य एवं दृश्यों के सूचीपत्र।
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की नवीनतम समाचार पत्रिकाएँ ।
- नारीवाद, देवताओं की घाटी इत्यादि पर सामग्री।

2. वेबसाइट के पते में बदलाव

भारत सरकार के परिपत्र के अनुसार, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट का पंजीकरण (डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु डॉट आईजीएनसीए डॉट जीओवी डॉट इन)के रूप में हुई और इसी की मैपिंग वर्तमान साइट के साथ एन आई सी द्वारा की जाएगी।

3. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट सर्वाधिक लोकप्रिय वेबसाइट्स में से एक है जिसे पिछले छः मास में 12.65औसत हिट्स प्रतिमाह के दर से लोगों ने देखा । (एन आई सी द्वारा विश्लेषित हिट्स के आधार पर)

कार्यक्रम – घ– सी आई एल की अन्य गतिविधियाँ

नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली के लिए प्रस्तुतीकरण

राष्ट्रीय संग्रहालय के लिए एक बहुमाध्यमिक प्रस्तुति विकसित की गई तथा इसे श्री जयपाल रेड्डी, सूचना प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री तथा मोंटेक सिंह अहलुवालिया, उपसभापति, योजना आयोग के समक्ष प्रदर्शित किया गया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कम्प्यूटर उपभोक्ताओं को तकनीकी सहायता

सी आई एल द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी विभागों को सभी प्रकार की तकनीकी सहायता (सिस्टम एडमिनिस्ट्रेशन, नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेशन, सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर इन्स्टॅलेशन, प्रोक्योरमेंट इत्यादि) प्रदान की गई।

कार्यक्रम ङ

सम्मेलन /कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ/व्याख्यान

आलोच्य वर्ष में निदेशक (सी आई एल) एवं उनके कर्मचरियों ने बहुत से सूचना प्रोद्यौगिकी सम्बन्धित सम्मेलनों में भाग लिया तथा लेख प्रस्तुत किए। अप्रैल 25-26 को कला सम्पदा एवं कॉइलनेट ने, टी डी आई एल, सूचना तकनीकी विभाग, भारत सरकार के अनुदान से, इलेक्ट्रानिक एण्ड इनफोरमेशन टेकनॉलाजी एक्सपोजिशन (एलिटेकस) 2005 में प्रदर्शनी आयोजित की।

नवम्बर 2005 को निदेशक (सी आई एल) श्री पी०झा० ने डिजिटल आर्कियोलॉजी : ए न्यू पैराडाइम फॉर विज्युलाइजिंग पास्ट थ्रु कम्प्यूटिंग एण्ड इन्फार्मेशन टेकानॉलॉजी शीर्षकसे मसूरी में आयोजित इण्डो-यू०एस०साइंस एण्ड टेकनॉलॉजी फोरम कार्यशाला में एक लेख प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम-च

नई परियोजनाएँ

निम्नलिखित परियोजनाएँ प्रमुख संस्थानों के साथ सहयोग करने के लिए विचारार्थ प्रस्तावित की ग

- नेशनल लाइब्रेरी, मंगोलिया की दो पाण्डुलिपियों कंजूर एवं तंजूर का डिजिटाइज़ेशन (आई सी आर के साथ)।
- आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के मुद्रित अभिलेखों का डिजिटाइज़ेशन (ए एस आई)।
- नेशनल डिजिटाइजेशन मिशन के कुछ माड्यूल (आई टी विभाग के अधीन)।
- परियोजना के लिए 29 वाक-थ्रू बनाए गए।
- लगभग 3 घंटे का विडियो लिया गया जिसमें से, एक घंटे के विडियो का प्रस्तुतीकरण हेतु प्रयोग किया गय
- डिजिटल कैमरे की सहायता से 1600 प्रतिरूप लिए गए। प्रतिरूपों के बढ़ाने का कार्य पूरा कि गया।
- परियोजना के लिए आवश्यक ऑडियो का डिजिटीकरण एवं संपादन, जातक कथाओं एवं परिच को कार्यान्वित करने के लिए किया गया।
- डेटाबेस बनाया गया।
- विषय-विशेषज्ञों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक बुक के लिए दिए गए लेखों को वेब-पृष्ठों के रूप में संपादि किया गया।
- प्रत्येक गुफा के परिचय का कार्य पूरा किया गया।
- सामग्री को एकबद्ध करने के लिए सॉफ्टवेयर तैयार किया गया।
- जनवरी, 2004 सीडी रोम के प्रयोगशाला संस्करण को विशेषज्ञ समिति एवं अन्तर्विभागीय अधिकारियों के सामने समीक्षा के लिए रखा गया।
- (विशेषज्ञ समिति को दिखाया गया)स्टॉल राष्ट्रीय संग्रहालय में बौद्ध धर्म पर लगाई गई एक प्रदर्शनी में 18 दिन के लिए (17 फरवरी से 5 मार्च, 2004 तक) स्थापित किया गया था। मसौदे के अन्तिम सत्यापन का कार्य विषय-विशेषज्ञों द्वारा किया जा रहा है। तदनुसार, गुफाओं का डेटाबेस संख्यानुक्रम से रखा एवं अद्यतन किया जा रहा है।
- अन्तिम सत्यापन एवं प्रतिरूप लेने का कार्य भी डेटाबेस में संभाला जा रहा है।

कलाकोश

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भो में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम - क

कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् 250 संकल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है। प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की गई है। इस शृंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक इसके पाँच खण्ड निकल चुके हैं इसका नवीनतम (खण्ड V) जिसमें आकार /आकृति पर आधारित लेख हैं गत वर्ष प्रकाशित हुआ।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, कलातत्त्वकोश खण्ड छः- पर्सेप्शन-आभास हेतु प्राप्त लेखों का सम्पादकीय कार्य जारी रहा। इस खण्ड में नौ पारिभाषिक शब्द आभास, छाया, बिम्ब-प्रतिबिम्ब, सादृश्य-सारूप्य, अव्यक्त-व्यक्त, पद, लिंग-चिह्न-लांछन, वृत्ति-रीति और अनुकृति-अनुकीर्तन होंगे। कलातत्त्वकोश के अगले दो खण्डों, आयतन एवं प्रतीक-अभिप्राय के लिए लेख तैयार करने का कार्य प्रगति पर हैं।

कलातत्त्वकोश के संदर्भ कार्ड :-

यह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी कार्यालय में कलातत्त्वकोश का सतत् कार्य है, जिसके अन्तर्गत (पहले से सूचीबद्ध) सम्बद्ध ग्रन्थों से संदर्भ कार्ड तैयार किए जाते हैं। यह संदर्भ कलातत्त्वकोश के शब्दों से सम्बद्ध हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शब्द पर लेख लिखने के लिए किया जाता है। लगभग 3400 नए संदर्भ कार्ड्स इस वर्ष वाराणसी कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा उद्धरण एवं उनके अनुवादों के साथ तैयार किए गए।

कार्यक्रम - ख

कलामूलशास्त्र

(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा निरन्तर कार्यक्रम है- वैदिक साहित्य, आगम, तंत्र, वास्तुकला, मूर्त्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों का

समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना। इस शृंखला के अतिरिक्त केन्द्र ने कुछ अन्य ग्रन्थों को प्रकाशित करने का कार्य लिया है जैसे इलस्ट्रेटेड डिक्शनरी ऑफ वैदिक रिचुअल आदि । ये कलामूल शास्त्र शृंखला के लिए सन्दर्भ ग्रंथों का काम करेंगे।

प्रकाशन

समीक्षाधीन अवधि में निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हुए :-

चतुर्दण्डी-प्रकाशिका: प्रो० आर० सत्यनारायण द्वारा कर्नाटक संगीत पर एक विस्तृत समालोचनात्मक अध्ययन।

निम्नलिखित कार्य पूर्णप्राय:हैं-पुस्तकें ऋत:द कॉस्मिक आर्डर : डॉ० मधुखन्ना से प्राप्त संगोष्ठी लेख।

वैदिक संस्कारों पर सन्दर्भ ग्रंथ

1. इलस्ट्रेटिड डिक्शनरी ऑफ वैदिक रिचुअल्स : रेखाचित्र, दृष्टान्त एवं छायाचित्र सहित डॉ० एच०जी०रानाडे द्वारा संकलित कार्य । आशा है जल्दी ही प्रकाशक को दे दी जाएगी।

आगम (वैष्णव, पञ्चरात्र)

2. ईश्वरसंहिता : (पाँच खण्डों में)प्रो० एम०ए० लक्ष्मी तताचार द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित तथा (स्वर्गीय) प्रो०वी०वरदाचारी द्वारा विस्तृत प्रस्तावना के साथ पुनरीक्षित। इस ग्रन्थ के सभी खण्डों की सी आर सी तैयार हो चुकी है एवं सहप्रकाशक के पास भेजने के लिए संवीक्षाधीन है।

वैदिक अथवा श्रौत संस्कार (कृष्ण यजुर्वेद)

3. बौधायन श्रौत सूत्र भवस्वामी के भाष्य सहित (खण्ड-1, 2 एवं 3) प्रो० टी०एन०धर्माधिकारी ने इसका समालोचनात्मक सम्पादन किया तथा प्रस्तावना लिखी। तीनों खण्डों के प्रूफ की जाँच अंतिम रूप से पुणे में सम्पादक द्वारा की जा रही है।

वैदिक/श्रौत संस्कार (सामवेदीय)

4. जैमिनीय-ब्राह्मण : प्रो० एच०जी०रानाडे द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद के पश्चात् पुणे में सम्पादक के निरीक्षण में टाइप-सेंटिग का कार्य किया जा रहा है एवं उन्होंने प्रथम प्रूफ जाँच लिया है।

अलंकार शास्त्र (सौंदर्यशास्त्र)

5. रसगंगाधर - इसके दोनों खण्डों का (लगभग 1900 पृष्ठ)समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद प्रो० रमा रंजन मुखर्जी ने किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम प्रूफ एवं अनुवाद की समीक्षात्मक जाँच पूरी हो चुकी है। आशा है, द्वितीय प्रूफ प्रेस से जून, 2006 में आ जाएगा।

सरस्वतीकण्ठाभरण

6. डॉ० सुन्दरी सिद्धार्थ द्वारा समालोचनात्मक सम्पादित एवं अनूदित तीन खण्डों में यह ग्रन्थ जाँच के अन्तिम चरण में है।

भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का अन्य भारोपीय भाषाओं के साथ सम्बन्ध

7. ग्लासरी ऑफ की आर्ट टर्म्स :- (स्वर्गीय) प्रो० विद्यानिवास मिश्र द्वारा 100 शब्दों की शब्दावली तैयार की गई । अधिकांश लेख पुन: लिखे जा रहे हैं एवं टाइप-सेंटिग का कार्य वाराणसी में चल रहा है।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र पर वैदिक ग्रन्थ सामग्री

8. कलाधार - यह (स्वर्गीय) प्रो० विद्यानिवास मिश्र द्वारा संकलित एवं सम्पादित प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों से लिए गए कलाओं के मूल अर्थ, संकल्पना एवं दर्शन को उद्घाटित करने वाले अंशों का संग्रह है। इस ग्रन्थ की टाईपसैंटिग हो चुकी है एवं प्रूफ जाँच के प्रथम स्तर पर है।

संगीत (पूर्वी भारतीय संगीत शास्त्र), उड़ीसा

9. संगीतनारायण-डॉ० मंदाक्रान्ता बोस द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवादित इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण सामग्री फरवरी, 2005 में सम्पादिका द्वारा दे दी गई है। संशोधन एवं अनुक्रमणिका का कार्य प्रगाति पर है। पाठ के पुन:प्रारूपण पर विचार किया जा रहा है। आशा है, अक्तूबर, 2006 में यह प्रकाशित हो जाएगा।

संगीत (पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारतीय)

10. नारद कृत संगीतमकरन्द- डॉ० एम विजयलक्ष्मी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित इस ग्रन्थ का कार्य अंतिम प्रूफ के स्तर पर है। कुल आठ में से प्रथम दो अध्यायों का पुनरीक्षण हो चुका है। आगे का कार्य प्रगति पर है।

वास्तुकला एवं नगर योजना

11. समरांगणसूत्रधार - (खण्ड 1 और 2) डॉ० पी०पी०आप्टे एवं श्री सी० वी० काण्ड द्वारा संपादित एवं अनुवादित ग्रन्थ के (कुल 83 अध्यायों में से) 56 अध्यायों का प्रथम प्रारूप तैयार हो चुका है एवं इसकी कॉपी-एडिटिंग हो रही है। इस अंश पर तकनीकी भाष्य का कार्य भी लगभग पूरा हो चुका है।

12. शाक्त तंत्र

मंथन-भैरव-तंत्र (कुब्जिकागम), नेपाल से प्राप्त पाण्डुलिपियों की सहायता से डॉ० मार्क डिक्ज़्कोवस्की द्वारा विस्तृत टिप्पणियों के साथ सम्पादित एवं अनुवादित इस ग्रन्थ की विस्तृतत प्रस्तावना (पृष्ठ 753) एवं खण्ड-1 (अध्याय 1 से 7,595 पृष्ठ)पूरा कर लिया गया है। शेष खण्डों की प्रतीक्षा है ताकि प्रकाशन कार्य सम्पन्न हो।

वर्तमान परियोजनाएँ

वैदिक कर्मकाण्ड

1. गोपथ ब्राह्मण : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० समीरन चन्द्र चक्रवर्त्ती।

वैदिक स्वर विज्ञान

2. याज्ञवल्क्य शिक्षा : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० नारायण दत्त शर्मा।

वैखानस सम्प्रदाय

3. मरीचि-संहिता : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० एस०एन०मूर्त्ति।

दक्षिण भारतीय प्रतिमालक्षण विज्ञान

4. तंत्र-सम्मुच्चय : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० के० के० राजा।

असाम्प्रदायिक पाँचरात्र

5. हयशीर्ष-पंचरात्र : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० गयाचरण त्रिपाठी

कर्नाटक संगीत

6. रागविबोध : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० रंगनायकी अय्यंगर

वास्तुशास्त्र

7. वास्तु मंडन : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० अनसूया भौमिक

बौद्ध दर्शन

8. शतसाहस्त्रिका प्रज्ञा पारमिता सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० रत्ना बासु

शाक्त तंत्र

9. साधनमाला : सम्पादक एवं अनुवादक : पं० सातकड़ि मुखोपाध्याय

शैवागम

10. अघोरशिवाचार्य पद्धति : सम्पादक एवं अनुवादक : (स्वर्गीय) डॉ० एस० एस० जानकी

खगोल-विज्ञान

11. राजप्रश्नीय सूत्रम : सम्पादक एवं अनुवादक : एस०आर०शर्मा।

अंलकार शास्त्र

12. शारदातनय कृत भाव-प्रकाशन : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० जे०पी०सिन्हा

सौन्दर्यशास्त्र

13. वेदावित्त प्रकाशिक : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० गयाचरण त्रिपाठी ।

कार्यक्रम - ग

कलासमालोचन शृंखला

(समालोचनात्मक विद्वत्ता और शोध के प्रकाशनों की शृंखला)

इस वर्ष इस कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाश में आए ।

1. लेटर्स ऑफ पं० बनारसीदास चतुर्वेदी; श्री नारायणदत्त शर्मा द्वारा संकलित एवं सम्पादित
2. मुगल एण्ड पर्शियन पेंटिंग्स एण्ड इलस्ट्रेटिड मैन्युस्क्रिप्ट्स इन द रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर; बार्बरा स्मिट्ज़ आदि द्वारा सम्पादित।

कार्यक्रम - घ

भारतीय कलाओं का विश्वकोश

न्यूमिस्मैटिक आर्ट्स ऑफ इंडिया- प्रो० बी० एन० मुखर्जी : यह परियोजना पूर्ण हो चुकी है। खण्ड 5 से 8 की मुद्रण प्रति अंतिम जाँच के लिए प्राप्त की एवं अन्य खण्ड तैयार किए जा रहे हैं। इस परियोजना के यह चारों खण्ड पुन: प्रारूपण के लिए प्रेस भेज दिए गए है एवं खण्ड I (मूलत: V) एवं खण्ड (खण्ड 5 से 7) के रूप में प्रकाशित होंगे।

कार्यक्रम -ङ

क्षेत्र अध्ययन

पूर्व एशिया कार्यक्रम

इस एकक ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं दुनहुआंग अकादमी के बीच साँस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का कार्यान्वियन किया।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चीन के दो विद्वानों प्रो० लियु एवं प्रो० जाओ ने भारत का तथा भारत से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० कल्याण कुमार चक्रवत्ती एवं वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी डॉ० राधा बनर्जी ने आठ दिनों (24 मई से 3 जून 2005) का चीन का दौरा किया । अपने चीन प्रवास के दौरान डॉ० चक्रवर्ती ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में इंडिया चाइना कॉर्नर स्थापित करने के लिए, दुनहुआंग अकादमी, बेजिंग के निदेशक प्रो० फानजिनशी से विस्तृत एवं महत्त्वपूर्ण चर्चा की । दुनहुआंग अकादमी के निदेशक ने मोग्गो एवं युलिन की कंदराओं से गचकारी एवं महत्त्वपूर्ण चित्रकलाओं के प्रतिरूप भेजने की सहमति दी। इसके अतिरिक्त दुनहुआंग अकादमी एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा **रिट्रेसिंग दि रूट ऑफ चाइनीज़ पिलग्रिम्स स्पेशली विस्तृत टू इंडिया** पर एक संयुक्त अनुसन्धान परियोजना लेने पर सहमति हुई।

सदस्य सचिव ने लाँगमैन अकादमी के निदेशक से इंडिया चाइना परियोजना आरम्भ करने विस्तृत चर्चा की। 29 मई, 2005 को डॉ० चक्रवर्त्ती ने पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के ग्रेट हॉल **एशियन कल्चरल कोपरेशन** पर एक व्याख्यान दिया।

जून 2005 को कुलपति, ताईयुवान, नॉर्मल यूनीवर्सिटी के साथ चीन-भारत अध्ययनों पर संयु अनुसन्धान के लिए एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए गए।

नवम्बर 2005 में डॉ० राधा बैनर्जी ने मंगोलिया के राष्ट्रीय पुस्तकालय में रखे हुए कंजूर-तंज़ पाण्डुलिपियों के डिजिटाइज़ेशन के सम्बन्ध में मंगोलिया का दौरा किया ।

प्रकाशन

पूर्व एशिया एकक के प्रकाशन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहभागिता के सर्वांगीण अधिगम को भारत एवं विश्व के परिप्रेक्ष्य में प्रतिबिम्बित करते हैं। निम्नलिखित प्रकाशन जाँच एवं प्रकाशन के अन्तिम स्तर पर है : -

1. श्वेनत्सांग एण्ड द सिल्क रूट पर अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही/प्रक्रिया मुद्रणाधीन है।
2. कलाकल्प पत्रिका के दूसरे और तीसरे अंक का सम्पादन किया गया एवं ये मुद्रणाधीन है।
3. प्रसिद्ध जर्मन इण्डोलॉजिस्ट प्रो० डी०शिलंग्लॉफ की अजन्ता नामक पुस्तक का जर्मन से अंग्रेजी में अनुवाद का कार्य श्री पीटर हेसनर द्वारा किया जा रहा है।

दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन

आलोच्य वर्ष में अनुसंधान अधिकारी, डॉ० बच्चन कुमार को एशिया पैसिफिक छात्रवृत्ति मिली एवं उन्होंने इण्डोनेशिया की यात्रा की । उन्होंने इस देश में विशेषकर बाली में महिषासुर मर्दिनी मूत्तियों पर कार्य किया एवं इस विषय पर एक मोनोग्राफ तैयार कर रहे हैं।

नारीवाद : जैण्डर, संस्कृति एवं सभ्यता का नेटवर्क

नारीवाद : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जैण्डर, संस्कृति, एवं सभ्यता नेटवर्क नारीवाद का आरम्भ मार्च 2005 में किया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पना में भारतीय लोकाचार एवं वास्तविकता के प्रांसगिक अनुसन्धान के आदर्श उपस्थापित करने की बात की गई है तथा इसमें कला एवं संस्कृति में महिलाओं के योगदान को हमारे प्रयत्नों के अभिन्न अंग के रूप में दर्शाया गया है। फिर भी इस बात की आवश्यकता है कि महिलाओं की संस्कृति में मौजूद विशाल स्रोत सामग्री को जेण्डर स्टडीज़ पर समकालीन व्याख्यानों के साथ जोड़ा जाए तथा इसको विकृत होने से बचाया जाए एवं साथ ही साथ इसको अतिसरलीकरण से बचाया जाए। नारीवाद का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं के साँस्कृतिक स्रोतों एवं ज्ञान प्रणाली को जेण्डर स्टडीज़ के अभिन्न तत्त्व के रूप में प्रासंगिक करना।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान किए गए कार्य :-

1. महिला अध्ययन अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई, एस एन डी टी महिला यूनीवर्सिटी, के सहयोग से सैल्फ हीलिंग थ्रू द सेल्फ इस अध्ययन में विभिन्न आस्थाओं की अनुयायिनी महिलाओं से चिकित्सा-कथाओं की समीक्षा की गई है।

2. वूमैन ट्राइबल आर्टटिस्ट पर शोध। यह अध्ययन मध्यप्रदेश की महिला जनजाति कलाकारों के चुनिन्दा सदस्यों वैयक्तिक इतिहास को लिपिबद्ध करता है।

3. जॉथन पारी हैरफल द्वारा द ट्राइब्ल डॉटर -व्यक्तिगत इतिहास पर एक अनुसन्धान प्रलेखन।

4. करवा चौथ ए रिचुअल ऑफ सुहाग - दिल्ली में नेटवर्क ऑफ प्रोफेशनल विमेन के सहयोग से इतिहास, कर्मकाण्ड एवं सामाजिक बदलाव पर कार्य किया।

ओरल हिस्ट्रीज़ ऑफ विमैन इन द मेकिंग ऑफ द फ्रीडम मूवमेन्ट का दृश्य/श्रृव्य प्रलेखन का कार्य पूरा हुआ। **रिक्लेकशन ऑफ ए सत्याग्रह** की सी०डी०रोम, श्रीमती रमा रुइया एक स्वतन्त्रता सेनानी एवं महिला आश्रम वर्द्धा की अध्यक्ष के साक्षात्कार के साथ तैयार किया गया एवं 45 वीडियो क्लिप्स बनाने का कार्य पूरा किया गया।

एक श्रृंखला **वूमैन ऑफ फेथ;** प्रीस्टेसेज़ ; रिलीजियस लीडर्स एण्ड ट्रुथ सीकर्स पर आरम्भ की गई। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित फिल्में बनाई गई:-

1. ए डायलॉग विद विमेन प्रीस्टेसेज़ ऑफ लेप्चाज़।
2. नारिर भव: द सिम्बोलिक फेमिनिन इन बाउल कल्चर ऑफ बंगाल।
3. द जर्नी ऑफ भिक्कुनीज़ एवं
4. द नारी सूत्राज़, भारत का प्रथम महिला गुरूकुल।

आगामी प्रलेखन हेतु दस प्रकरणों का अन्वेषण किया गया।

जनपद-सम्पदा

जनपद-सम्पदा प्रभाग आर्थिक-साँस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से समुदायों की जीवन शैलि परम्पराओं, लोक विद्या एवं कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन सम्बन्धित है। मौखिक परम्पराओं पर केन्द्रित इस प्रभाग का कार्यपटल विभिन्न साँस्कृतिक दलों त समुदायों के बीच अन्तस्संबंधों को बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है। इ प्रभाग के कार्यकलाप निम्नलिखित है:-

क) मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

ख) बहु माध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ

ग) जीवन शैली अध्ययन

1) लोक परम्परा

2) क्षेत्र सम्पदा

कार्यक्रम 'क'

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह : इन संग्रहों में मूल अनुकृतियाँ तथा रिपोग्राफिक प्रतिलिपियों का अर्जन शोध, समीक्षा व प्रसार हेतु आधारभूत स्रोत सामग्री के रूप में किया जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए गए :-

परियोजना

'राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की लोक चित्रकलाएँ ' नामक परियोजना विकास आयुक्त (हेण्डीक्राफ्ट) के सहयोग से चलनेवाली एक सतत परियोजना है। राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की सात पारम्परिक लोक चित्रकलाओं जैसे सांझी, मांडना, गोदना, चितरावन, थापा, पिथोरा, भील एवं गोंड आदिवासी चित्रकलाओं का प्रलेखन किया गया । सांझी कला परम्परा पर सी डी रोम का कार्य सम्पन्न हुआ। सभी सातों शैलियों के लिए क्षेत्रीय सर्वे, ऑडियो-वीडियो प्रलेखन एवं क्षेत्रीय रिपोर्टों का कार्य पूर्ण हुआ। माण्डना कला पर मौलिक ग्रंथ तैयार करने का एवं सी डी रोम बनाने का कार्य अंतिम चरण में है। गोंड एवं भील चित्रकला एवं गोदना परम्परा पर मौलिक ग्रन्थ तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

कैटलॉग

1. राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की लोक चित्रकलाओं पर स्लाइड्स, फोटोग्राफ्स, रेखाचित्रों एवं ऑडियो-वीडियो के डिजिटाइज़ेशन का कार्य सम्पन्न हुआ। डी वी डी के अवासि कैटलॉग एवं उत्पादन का कार्य प्रगति पर है।

2. अन्तर्विभागीय परियोजना 'स्पेटियल एण्ड टेम्पोरल प्रोसस अमंग द गद्दीज़ ऑफ भरमौर, हिमाचल प्रदेश' के दौरान उत्पादित, रिप्रोग्रैफिक एवं श्रव्य-दृश्य पदार्थों के अवाप्ति कैटलॉगिंग एवं डिजिटाइज़ेशन का कार्य आरम्भ किया गया। यह कार्य प्रगति पर है।

कार्यक्रम 'ख'

बहुमाध्यमिक प्रस्तुतीकरण एवं कार्यक्रम

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण कार्य मानव की मूल/मौलिक अवबोधन शक्तियों में से कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। सम्भाव्यत: मानव को अपनी दृश्य एवं श्रृव्य आदिम शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ। शैलकला आदि दृश्य कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण संघटक है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2005-2006 में निम्नलिखित परियोजनाएँ सम्पन्न की गई।

मध्य भारत एवं निकटवर्ती राज्यों में शैल कला का प्रलेखन :

क्षेत्र प्रलेखन के लिए, पूर्व अपेक्षित स्थान एवं स्रोत व्यक्तियों को चुनने का कार्य किया गया एवं चुनिंदा क्षेत्रों के मौलिक डाटा को एकत्रित किया गया। एक मौलिक ग्रन्थ-सूची का भी संकलन किया गया तथा क्षेत्रीय डाटा फार्मेट को अन्तिम रूप देने के लिए एवं क्षेत्रीय कार्य की ओर अग्रसर होने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 3 नवम्बर, 2005 को शैल कला पर विशिष्ट बैठक/कार्यशाला का आयोजन किया गया।

परियोजना के प्रथम चरण में मध्यप्रदेश एवं उड़ीसा के राज्यों में प्रलेखन कार्य प्रारम्भ किया गया। उड़ीसा में क्षेत्रीय कार्य का प्रथम चरण 18 से 26 फरवरी, 2006 को पूरा किया गया। इस अवधि में चार जिलों-बारगढ़, झारसुगुडा, सुन्दरगढ़ एवं सम्बलपुर का कार्य पूरा किया गया। सात शैल कला स्थानों, बारबाखार, डेबरीगढ, विक्रमखोल, लेखामोढ़ा, उलापगढ़, छत्तागढ़ एवं भीममण्डली को प्रलेखित किया गया। पाँच गाँवों मुण्डाकती, देवरीगढ़, तेनतुलिया बाहाल, संथारा एवं बीचहाना को मानवीय पुरातत्त्व अध्ययन के लिए प्रलेखित किया गया।

26 मार्च से 2 अप्रैल, 2006 तक मध्यप्रदेश के तीन जिलों भोपाल, रायसेन एवं सेहोर को प्रलेखित किया गया। इन तीन जिलों में जिन आठ शैलकला स्थानों को प्रलेखित किया गया वह हैं :- नागोरी, कथोटिया, केरी महादेव, जाओरा, चिलदन्त, बोडाकोह, सिलाजित एवं शमला हिल। इस क्षेत्रीय कार्य के दौरान तीन गाँवों-नागोरी, कथोटिया एवं जाओरा को भी मानवीय पुरातत्त्व अध्ययन के लिए प्रलेखित किया गया।

कार्यक्रम 'ग'

जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया गया। यह कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र-सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र है।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत साँस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक-साँस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएँ , क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती है। वर्ष 2005-2006 में निम्नलिखित दीर्घावधिक परियोजनाएँ आरम्भ की गई :

सोशियोलॉजिकल रेमिफिकेशन्स ऑफ द प्रोपोज्ड एशियन हाइवे इन द नार्थ ईस्ट यह अध्ययन संस्कृति, समाज, राज्य एवं बाजारों के मध्य पारस्परिक क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। यहाँ समुदायों के जीवन की सम्पूर्णता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। प्रारंभिक अध्ययनों की शुरुआत की गई। 4 से 5 अक्तूबर, 2005 को गुवाहाटी (असम) में एक कार्यशाला तथा एक अन्य संगोष्ठी 3 मार्च, 2006 को शिलॉग में आयोजित हुई। 3 मार्च, 2006 को तृतीय बैठक गुवाहाटी में रखी गई। यह बैठकें एवं कार्यशालाएँ उत्तर पूर्व में विभिन्न संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक कार्य करने की प्रकारता को सुनिश्चित करने के लिए की गई थी। इस कार्य के लिए निम्नलिखित संस्थाओं के व्यक्तियों का नेटवर्क तैयार किया गया:-

1. ओमियो कुमार दास इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल चेंज एण्ड डेवलपमेंट , गुवाहाटी;
2. इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ आन्ट्रप्रनरशिप, गुवाहाटी
3. डॉ० टाडो कार्लो, भौतिक विज्ञान विभाग, अरुणाचल यूनिवर्सिटी
4. सुश्री रोज़मैरी जुविचु, अंग्रेजी विभाग, नागालैण्ड यूनिवर्सिटी
5. प्रो० लियांज़ेला, अर्थशास्त्र विभाग, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी आइज़ोल
6. प्रो० पी०के०हलदार, कॉमर्स विभाग, त्रिपुरा, यूनिवर्सिटी, अगरतला
7. डॉ० जी० नेपाली, नेपाली भाषा विभाग, नार्थ बंगाल यूनिवर्सिटी, सिलिगुड़ी
8. प्रो० ए०सी० भगवती
9. प्रो० डेविड आर०सिमलिया
10. प्रो० नीरु हजारिका
11. प्रो० अमर युमनाम

इस परियोजना के लिए उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय विकास मंत्रालय से 43 लाख रु० का अनुदान प्राप्त हुआ। भूतत्त्वशास्त्र के विद्वान एवं उत्तर-पूर्व के विशेषज्ञ प्रो० बी०के०रॉय बर्मन इस परियोजना के पर्यवेक्षक हैं।

वूमैन पायनियरस एण्ड आन्ट्रप्रनर्स इन अरुणाचल प्रदेश : अरुणाचल प्रदेश के निम्नलिखित जिलों में मार्गदर्शक सर्वेक्षण किया गया:-

1. ईस्ट सियांग; 2. वेस्ट सियांग; 3. लोअर सुबान सीरी; 4. वेस्ट कामेंग; 5. तवांग एवं 6. इटानगर।

यह अध्ययन, जो पारस्परिक अन्तर्क्रियाओं पर आधारित है, विभिन्न व्यवसायों की स्त्रियों के साक्षात्कार द्वारा किया गया। इस मार्ग दर्शक अध्ययन के निष्कर्षों का एक संगोष्ठी में विवेचन किया गया। तर्क-वितर्क, स्व-सहायता वर्ग, सूक्ष्म-वित्तीय सहकारियों एवं योजनाओं द्वारा स्त्रियों द्वारा व्यवसाय के विकास में किए गए कार्यों पर केन्द्रित रहा। इस परियोजना को अब बड़ी परियोजना सोशियोलॉजिकल रेमिफिकेशन्स ऑफ द प्रोपोज्ड एशियन हाइवे इन द नार्थ ईस्ट इण्डिया के साथ जोड़ दिया गया है।

सहयोगात्मक परियोजना

'स्पेस एण्ड टाइम अमंग द संथालस' पर ओंकार प्रसाद द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट संकलित की जा रही है।

क्षेत्र-सम्पदा

एक नूतन आयाम तथा लोक संस्कृति पर इसके प्रभाव की खोज करने के लिए जनपद सम्पदा प्रभाग के जीवन शैली अध्ययन कार्यक्रम ने क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम की कल्पना की जो एक साँस्कृतिक क्षेत्र या स्थल-विशेष या एक मन्दिर तथा उसके एककों का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करेगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित कार्य किए गए।

परियोजना

केरल में पी०आर०जी०माथुर द्वारा 'क्षेत्र सम्पदा ऑफ गुरुवयूर टेम्पल फेस I एण्ड II' का कार्य पूर्णप्राय हुआ। अध्ययन के प्रथम चरण में मंदिर की वास्तुकला, मंदिर के स्थान का सदुपयोग तथा मूर्त्तिकलाओं पर केन्द्रित किया गया है। अध्ययन का दूसरा भाग मंदिर के स्थान तथा धार्मिक क्रियाओं, मंदिर के अधिकारियों एवं सामाजिक संरचना, मंदिर में आयोजित उत्सवों तथा त्यौहारों पर केन्द्रित है। अध्ययन पर आधारित ग्रन्थ प्रकाशन के लिए तैयार किया जा रहा है।

प्रकाशन

डॉ० आर० नागास्वामी की पुस्तक आइ आइकॉनाग्राफी ऑफ बृहदीश्वर टेम्पल मुद्रणाधीन है।

संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ

1. 2 अप्रैल, 2005 को 'ए रैपिड अप्राइज्ल ऑफ द लाइफ वर्ल्ड इन द नार्थ-ईस्ट इंडिया' पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यह उत्तर-पूर्व भारत के युवाओं के जीवन्त संसार तथा उनकी सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर केन्द्रित था । इस सेमिनार में दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी एवं आई आई टी दिल्ली से उत्तर-पूर्व के विभिन्न भागों के विद्यार्थियों सहित उत्तर पूर्व के नृतत्त्वशास्त्रियों एवं विशेषज्ञों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने वैयक्तिक इतिहास, बचपन की यादों, स्थानीय प्राकृतिक दृश्यों एवं अपने गाँव की शिक्षा प्रणालियों पर आधारित प्रस्तुतीकरण किए। इस सेमिनार का उद्देश्य उत्तर-पूर्व भारत के युवाओं की आशाओं एवं महत्त्वकांक्षाओं को समझना था।

2. 'ग्लौरियस एसपैक्ट्स ऑफ हैरिटेज ऑफ मणिपुर' विषय पर 22 जुलाई, 2005 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन, प्रो० एच०डी०शर्मा द्वारा सम्पादित खण्ड 'ग्लोरियस एसपैक्ट्स ऑफ हैरिटेज ऑफ मणिपुर' पर पुनरीक्षण एवं चर्चा हेतु किया गया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने प्रकाशन के लिए उक्त ग्रन्थ को स्वीकृत किया।

3. क्षेत्रीय कार्य के दौरान अन्तर्विभागीय विद्वानों ने अग्रगामी अध्ययन की एक परिचर्चा पर 22 जुलाई 2005 को 'वूमैन पायनर्स एंड आन्ट्रप्रनर्स इन अरुणाचल प्रदेश' पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। अध्ययन की परिरेखा को परिष्कृत करने के लिए श्रेष्ठ विद्वानों एवं नृतत्त्वशास्त्रियों को उनके विचारों को जानने हेतु आमन्त्रित किया गया। यह अध्ययन अब उत्तर-पूर्व भारत पर एक बड़ी परियोजना का अंग बन गया है।

4. अन्तर्विभागीय विद्वानों एवं अधिकारियों को 'इन्टैन्जिबल हैरिटेज ऑफ इण्डिया' विषयक संकल्पनाओं उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं कार्यान्वयन योजना से सुपरिचित कराने हेतु 8 से 10 अगस्त, 2005 तक 'इनटेंजिबल हेरिटेज ऑफ इंडिया' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

5. 2 सितम्बर, 2005 को 'इको क्राइसिस एज ए डायमेंशन ऑफ सिविलाइजेशनल क्राइसिस' पर इंडियन एकडेमी ऑफ सोंशल साइंस, इलाहाबाद के सहयोग से एक अधिवेशन का आयोजन किया गया । यह 29वें सामाजिक विज्ञान कांग्रेस का पूर्ववर्ती था जो कि दिसम्बर, 2005 में सभ्यता के संकट प्रकरण पर लखनऊ में रखा गया था।

6. 4 से 5 अक्तूबर, 2005 को विभिन्न संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक कार्यों की रूपरेखा तैयार करने के लिए तथा परियोजना को कार्यान्वित करने की एक साकार योजना बनाने के लिए गुवाहाटी में सोशियोलॉजिकल रैमिफिकेशन ऑफ प्रोपोज्ड हाईवे इन द नाथ-ईस्ट पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

7. फसल-नियोजन में पारम्परिक ज्ञान प्रणाली की भूमिका पर चर्चा हेतु नवम्बर, 2005 को 'एग्रो इकोनॉमिक, क्रॉप पैटर्न एंड डेवलपमेंट : ए केस स्टडी ऑन द ट्रेडिशनल मैथड ऑफ शुगरकेन

कल्टीवेशन' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला मुख्यत: पूर्वी उत्तर-प्रदेश में गन्ने की खेती के एक व्यष्टि अध्ययन पर आधारित थी। पारम्परिक 'कृषि-अर्थव्यस्था' के रख-रखाव में सांस्कृतिक धरोहर की भूमिका पर भी चर्चा की गई।

13 जनवरी, 2006 को राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन एवं लोक संयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूतावास, नई दिल्ली सार्वजनिक कार्य अनुभाग के सहयोग से 'ओरल हिस्ट्री' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में मौखिक इतिहास के प्रणाली विज्ञान एवं उसकी भारत के साथ संबद्धता पर चर्चा की गई। यह कार्यशाला विभिन्न अध्ययनों पर हुई चर्चाओं पर आधारित थी। प्रतिभागियों को मौखिक इतिहास के विभिन्न लेखों से अवगत कराया गया।

चर्चा/व्याख्यान

1. 5 अप्रैल, 2005 को डॉ० डी०जे०बोरा ने 'मोआमारिया रिवोल्ट इन आसाम' पर एक विशेष परिचर्चा प्रस्तुत की। मोआमारिया विद्रोह एक तरह से उत्तर पूर्व भारत के लिए निर्णायक ही रहा क्योंकि अहोम राजा ने पहले अंग्रेजों का और फिर बर्मा का हस्तक्षेप मांगा। इसने न केवल अंग्रेजों को असम में पैर जमाने का बल्कि मणिपुर तथा बराक घाटी में, जिसे बर्मा वालों ने उजाड़ दिया था, लगभग प्रभुत्व जमाने का अच्छा अवसर दिया।

2. 9 मई, 2005 को, श्री डी०के बोरा ने इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइज़ेशन ऑन नार्थ ईस्ट इंडिया विद स्पेशल रैफरेन्स टू द ट्राइब्स ऑफ अरुणाचल प्रदेश पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के आदिवासियों की पारम्परिक जीवन शैलियों तथा उनमें देशी प्रथाओं पर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों पर जिसके कारण वश प्राकृतिक साधनों में, कल्पनाओं में ,तथा ज्ञान प्रणालियों में कमी हो रही है, पर चर्चा की। इसी प्रकरण पर एक फिल्म भी दिखाई गई।

3. जून, 2005 को डॉ० मौली कौशल ने 'शिवा इन कलासिकल एंड ओरल नैरेटिव्ज़' पर एक व्याख्यान दिया। यह चर्चा, पाठपरक एवं मौखिक वृत्तान्तों में की गई भगवान शिव से जुड़ी हुई संकलपनाओं जैसे समय, स्थान, शरीर एवं ध्वनि के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित थी ताकि दोनों परम्पराओं की कल्पनाओं में समानता सामने आए ।

4. 8 अगस्त, 2005 को प्रो० टी०एस०राजेन्द्रन ने 'संगम लिटरेचर' पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने संगम कविता की धरोहर से जुड़े विभिन्न प्राकृतिक भू-दृश्यों, ऋतुओं एवं फूलों पर चर्चा की।

5. 23 दिसम्बर, 2005 को सचिव, देशकाल सोसाइटी श्री संजय कुमार ने 'मुसहर समुदाय' पर एक व्याख्यान दिया जिसके बाद एक फिल्म भी दिखाई गई। इसमें मुसहर समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर ज्ञान, पहचान तथा आर्थिक विकास पर चर्चा की गई।

6. इस्लाम की मौखिक परम्पराओं पर दो चर्चाएँ - 1. अक्तूबर,2005 में डॉ० फरहत रिज़वी द्वारा 'परफार्मिंग ट्रेडिशन ऑफ इस्लाम' पर तथा 2. 29 दिसम्बर,2005 को डॉ० वासे द्वारा 'ट्रेडिशन

ऑफ ओरल रिसीटेशन इन इस्लाम' शीर्षक पर सम्पन्न हुईं। इस्लाम की मौखिक परम्परा पर शास्त्रीय तथा अशास्त्रीय संगत परम्पराओं पर विवेचना हेतु दो चर्चाएँ आयोजित की । राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने के लिए संकल्पनात्मक ढांचा तैयार करना था। एक चर्चा अक्तूबर, 2005 में तथा दूसरी 29 दिसम्बर, 2005 को डॉ० वासे द्वारा 'ट्रेडिशन ऑफ ओरल रिसाइटेशन इन इस्लाम' पर दी गई।

कलादर्शन

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है।

अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्भुत शैली विकसित की है। यह प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यकलापों से सम्बन्धित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, सभाओं एवं व्याख्यानाओं का आयोजन करता है।

प्रदर्शनियाँ

संस्कृति के क्षेत्र में विदेशों के साथ सहयोग एवं संवाद को प्रोत्साहित करना कलादर्शन प्रभाग के कार्यों में से एक है। इस वर्ष भारत में विभिन्न राजदूतावासों ने प्रदर्शनियाँ एवं अन्य कार्यक्रमों के आयोजनों में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ सहयोग किया।

1. 30 मार्च से 14 अप्रैल, 2005 तक इज़राइल राजदूतावास के सहयोग से 'डोमेंस : कंटेम्प्रेरी इजराइली डिजाइन' शीर्षक से एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इजराइल के राजदूत ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक संरचना मंच प्रदर्शनी द्वारा चुने हुए इज़राइली छात्रों द्वारा औद्योगिक उपयोग के लिए, विकसित नई संरचनाओं को चित्रित किया।

2. 2 से 6 मई, 2005 तक भारत में यूनाइटिड स्टेट्स एजुकेशनल फाउंडेशन के सहयोग से अमेरिकन फुलब्राइट विद्वानों द्वारा 'इंडियन इमप्रेशन' शीर्षक से एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी का उद्घाटन अमेरिकी दूतावास के मिनिस्टर कांउसलर फॉर पब्लिक अफेर्यस श्री माइकल एच०एंडर्सन एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती द्वारा किया गया। विद्वानों ने भारत के वस्त्रों, दरगाह पर सूफी संगीत एवं पारम्परिक चित्रकलाओं पर कार्य किया था। मुख्यत: पारम्परिक अध्ययन केन्द्रों (गुरुकुल)विशेषकर संस्कृत एवं वैदिक अध्ययन के प्रलेखन आकर्षण के विशेष केन्द्र था, एक अन्य आकर्षण मिट्टी एवं रेत की नमी मापने के स्वदेशी यंत्रों के अध्ययन के लिए समर्पित था।

3. चीनी दूतावास के सहयोग से 'रीडिस्कवर चाइना' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें चीन में हुई वृद्धि एवं विकास तथा चीनी लोगों के जीवन में रची-बसी हुई चीनी कलाओं एवं धरोहर पर प्रकाश डाला गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन 9 मई को विदेश राज्य मंत्री श्री टी०राजशेखर रेड्डी द्वारा किया गया तथा यह प्रदर्शनी 20 मई, 2005 तक चली।

4. 5 से 12 सितम्बर, 2005 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से यूरोपियन संघ के सदस्य देशों द्वारा यूरोपियन सप्ताह उत्सव के अवसर पर सेंट्रल यूरोपियन फोटोग्राफ ऑन आर्किटेक्चर के चुनिन्दा फोटोग्राफ की एक प्रदर्शनी 'फार्म एवं नॉन-फार्म' शीर्षक से आयोजित की गई । उद्घाटन समारोह में आस्ट्रेलिया, चेकोस्लोवाकिया गणराज्य, हंगरी, पोलैंड, स्लोवाकिया एवं स्लोवेनिया के राजदूत एवं अन्य गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। पोलैण्ड के 'दि स्ट्रिंगस' दल के संगीत कार्यक्रम ने इस अवसर को यादगार बना दिया।

5. तिब्बत : 'ए स्नोई प्लैटो' चीनी राज्य के सौजन्य से आयोजित प्रतियोगिता से पारितोषिक वि[illegible] फोटोग्राफ्स की एक प्रदर्शनी जो तिब्बत को प्रलेखित करने हेतु लगाई गई थी ताकि चीन के [illegible] तिब्बत के क्षेत्र को ठीक तरह समझ कर कार्य कर सकें। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र [illegible] सहायता से चीनी दूतावास द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन तमिलनाडु में 16 सितम्बर [illegible] राज्यपाल श्री भीष्म नारायण सिंह द्वारा किया गया और यह 23 सितम्बर 2005 तक खुली रही।

6. डिवाइन लिथोग्राफी : प्रो० एनरिको कास्टेलि और डॉ० जिओवनी आप्रिल द्वारा निर्मित एवं संग्रह [illegible] लिथोग्राफिक प्रिन्ट्स एवं कलाकृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन इटली के राजदूत महामहिम [illegible] एन्टोनियो आर्मेलिनी द्वारा 8 नवम्बर, 2005 को किया गया। दोनों विद्वान् इटली के ताम्बुरो पारला[illegible] म्यूज़ियम से हैं। दृश्य वस्तुओं की हमारी दृष्टि के माध्यम से विचार-प्रक्रिया एवं व्यक्त जगत [illegible] परिवर्तित करने की अद्भुत क्षमता ने विचारकों, सामाजिक वैज्ञानिकों एवं कला-समीक्षकों [illegible] अभिरूचि को प्रस्फुटित किया है। इस प्रदर्शनी में लिथोग्राफ्स के माध्यम से दृश्य की क्षम[illegible] रेखांकित की गई। यह 18 तारीख तक चलनी थी पर इसकी प्रसिद्धि को देखते हुए इसे 25 नवम्ब[illegible] 2005 तक बढ़ाया गया।

7. 16 दिसम्बर को फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के धर्म शास्त्र के प्रोफेसर वसुधा नारायण की ए[illegible] फोटोग्राफी यात्रा पर आधारित कांची एण्ड कम्बुजा कल्चरल कॉंटेक्ट्स विद द ख्मेर अम्पाय[illegible] प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इसमें कम्बोडिया पर भारत के वास्तुकला के विशेषकर मंदिरों की संरचना में, प्रभाव को प्रकाशित किया गया है। डॉ० वसुधा नारायण ने इन दो क्षेत्रों के बिन्दुओं एवं प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए तुलना करते हुए एक व्याख्यान भी दिया। यह प्रदर्शनी 31 दिसम्बर 2005 तक खुली रही।

8. 'इण्डियन एनिग्मा' शीर्षक से युनाईटेड स्टेट्स एजुकेशनल फाउंडेशन इन इण्डिया के सहयोग से अमेरिकन फुलब्राइट स्कालर्स इन इण्डिया के दूसरे दल के कार्यों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री अदनान अहमद सिद्दकी, संयुक्त राज्य दूतावास एवं यू०एस०इ०एफ०आई०बोर्ड के अध्यक्ष संस्कृति मामलों के अधिकारी, एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती द्वारा 13 फरवरी को किया गया। यह प्रदर्शनी 17 फरवरी, 2006 तक चली। इसमें भाग लेने वालों में वास्तुकला के विद्यार्थी एन्थोनी एक्सीवट्टी, फोटोग्राफर ताइसी वर्कले, फोटोग्राफर माइकेल बुहलर-रोज, जिन्होंने भारत में गुरुकुल परम्परा के फोटोग्राफ लिए ; अंजली देशमुख, एक चित्रकार जिन्होंने भारतीय पारम्परिक दार्शनिक चित्रकलाओं में मंडलों का अध्ययन किया; सूफी संगीत के एक छात्र क्रिस्टोफर हॉलैंड, तथा एक चित्रकार लॉरेन पोर्टाडा सम्मिलित हैं। प्रदर्शनी का आयोजन करते हुए 14 फरवरी को उसी प्रकरण पर एक दिन की संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें फुलब्राइट विद्वानों ने अपने अध्ययन वृत्तान्त प्रस्तुत किए।

9. पार्टिसिपेटरी टेक्नॉलॉजीज़ : आर्ट, फिल्म, लर्निंग, मीडिया :- कलाओं के क्षेत्र में ऐतिहासिक परिचर्चा को रचने तथा निर्माण करने में आई०जी०एन०सी०ए० द्वारा यंत्र विज्ञान के उपयोग को

स्वीकारते हुए सोनी ग्रुप ने एक प्रदर्शनी में विभिन्न नए उपकरणों तथा यंत्र-विज्ञान को दर्शाने के लिए आई०जी०एन०सी०ए० से सम्पर्क किया, जिससे इन उपकरणों को दूरी एवं भाषा के अवरोधों को दूर करते हुए पूरे विश्व के साथ प्रलेखन, शिक्षण तथा संचार में उपयोग किया जा सके। यह तीन दिवसीय प्रदर्शनी सोनी ग्रुप द्वारा आई०जी०एन०सी०ए० के सहयोग से आयोजित की गई थी तथा इसका उद्घाटन 24 नवम्बर को आई०जी०एन०सी०ए० में सोनी ग्रुप के अध्यक्ष द्वारा किया गया।

10. भारत के प्राचीन कला सम्बन्धी भित्ति चित्रों एवं बिनॉय के बहल के दक्षिणी एशिया के फोटोग्राफ्स को की एक प्रदर्शनी 'द लिगेसी ऑफ अंजता' शीर्षक से 24 नवम्बर से 10 दिसम्बर, 2005 तक आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन पंचायती राज्य मंत्री श्री मणिशंकर अय्यर द्वारा हुआ। श्री बिनॉय बहल ने भारत एवं दक्षिणपूर्व एशिया के भित्ति चित्रों के स्लाइडों की एक बड़ी शृंखला की सहायता से सचित्र प्रस्तावना दी। इस प्रदर्शनी ने अजंता के भित्ति चित्रों तथा श्री लंका, भूटान, कम्बोडिया, नेपाल एवं म्यनमार के भित्ति चित्रकलाओं पर उनके प्रभावों पर प्रकाश डाला । इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने सी०आई०एल० टीम द्वारा लिए गए डिजिटल फोटो की सहायता से अजंता पर एक सी०डी०रोम तैयार किया।

11. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के संग्रहों से प्राप्त पौराणिक एवं लोक कथाओं पर आधारित 'अनुगूंज' शीर्षक से एक प्रदर्शनी का आयोजन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने किया इसके साथ ही समस्त भारत से आए शिल्पियों के साथ एक कार्यशाला भी आयोजित की गई। पारम्परिक कलाकारों से बातचीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र संकाय के सदस्य तथा प्रेस के लोगों ने शिल्पकारों से मुलाकात की। प्रत्येक कलाकार ने अपने जाति/समुदाय के मतों के विषय में जानकारी दी जो उनकी कलाओं में प्रतिबिम्बित होती है। 19 से 31 दिसम्बर, 2005 तक पद्मश्री हकु शाह द्वारा, यह प्रदर्शनी जन साधारण के लिए खोली गई।

12. 9 जनवरी, 2006 को डी०जी०, आई०सी० सी०सी०आर०, श्री पवन वर्मा ने हर्ष देहेजिया के फोटोग्राफों एवं कविताओं पर आयोजित 'विरहिणी नायिका नामक' एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के लघु चित्रों में चित्रकला के द्वारा प्रियतमा की लालसा एवं उत्कंठा पर प्रकाश डाला गया । विरह प्रकरण पर आधारित प्राची मेहता के ओडिसी नृत्य ने तथा श्रीमती रेबा सोम के रविन्द्र संगीत ने इस अवसर को विशिष्ट बना दिया।

13. 'बहुसाँस्कृतिक समाज में भारत की सामासिक संस्कृति ' 17 वें विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने नई दिल्ली प्रगति मैदान में बहु-साँस्कृतिक उद्देश्य पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया । यह प्रदर्शनी 4 फरवरी, 2006 तक चली।

'द पीपल ऑफ इंडिया' प्रथम खण्ड में भारतीयों के विशाल जन समूह को विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न व्यवसायों के भू-अर्थशास्त्र एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखा गया जिससे भारतीय बहु-संस्कृति को बखूबी उजागर किया गया ।

'भारत के दर्शन एवं आस्थाएँ' यह खण्ड भारत में प्रचलित बहु भाषा, बहु जातीय, बहु धार्मिक प्रथाओं एवं पवित्र स्थानों पर विश्वास, चाहे वह मंदिर मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च या सूर्य एवं चन्द्रमा,

नदियाँ एवं उपवन या पंचतत्त्व हों, पर केन्द्रित था। इन विश्वासों तथा धर्मों से जुड़े हुए त्यौहारों धार्मिक परम्पराओं जिसमें जन्म, विवाह एवं मरण भी सम्मिलित हैं को दर्शाया गया था।

त्यौहारों तथा धार्मिक परम्पराओं के प्रकरण से निकली हुई थी। भारत की प्रदर्शनात्मक कलाएँ हस्तकलाएँ जो भारत को रचनात्मक व अतुलनीय बनाते हैं। यह विशेष खण्ड था जिसमें इ गाँधी राष्ट्रीय संग्रहालय, भोपाल, आदिवासी परिषद, क्राफ्ट्स म्युज़ियम, भारत भवन तथा नेश बुक ट्रस्ट एवं आई०जी०एन०सी०ए० के प्रदर्शनी योग्य वस्तुएँ तथा प्रकाशन रखे गए थे।

मोमेण्ट्स ऑफ प्राइड इन इंडियन लाइफ खण्ड में भारत के स्वाभिमान तथा प्रयत्नों के प्रकरण चित्रित किया गया था जिसमें व्यक्ति विशेष के विभिन्न क्षेत्रों जैसे नृत्य, संगीत साहित्य, खेल विज्ञान, सुरक्षा, वाणिज्य में विजयों तथा प्रतिष्ठित मंचों में भारत के प्रतिनिधित्व को उजागर कि गया।

'लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष भारत' की धारणा, जिसमें सभी लोकतांत्रिक पहलुओं को चित्रि किया था, में भारत के सम्पूर्ण संविधान का सारांश दिया था।

14. मंगलवार 7 मार्च, 2006 सायं 4.30 बजे मुगल मिनिएचर्स ऑफ रामपुर नामक प्रदर्शनी आई०जी०एन०सी०ए० के प्रकाशन मुगल एण्ड पर्शियन पेंटिंग्स एण्ड इलस्ट्रेटेड मैनुस्क्रिप्ट्स इन रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर (डॉ० बाबरा श्मिट्ज़ एवं ज़ियाउद्दीन ए० देसाई द्वारा रचित)का विमोच किया गया। प्रदर्शनी 15 मार्च तक चलती रही।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के जार्ज वी० बिकफोर्ड प्रोफेसर ऑफ इंडियन एण्ड साउथ एशियन आर्ट, प्रो प्रमोद चन्द्र ने पुस्तक का विमोचन किया तथा बेगम निखत आबिदी राजकुमारी, रामपुर ने प्रदर्श का उद्घाटन किया । यह प्रदर्शनी भारतीय कला की एक लघु-कलाओं की विशेषताओं पर एक अन्यतम अध्ययन थी।

15. सेलिब्रेशन ऑफ डाइवर्सिटी (डायलॉग एण्ड एम्पावरमेन्ट): यह प्रदर्शनी एन्थ्रोपोलोजिकल स ऑफ इंडिया के सहयोग से, भारतीय आदिवासियों के स्पष्ट एवं विविध सांस्कृतिक उज्जव रूपरेखा को चित्रित करते हुए, आयोजित की गई थी।

16. तोरी कथा (बंगाल की नौकाएँ) : नौकाओं के मॉडल से पूरक करते हुए श्री स्वरूप भट्टाचार्य द्वार तैयार फोटो प्रलेखन का 22 मार्च, 2006 को, डॉ० लोतिका वरदराजन द्वारा उद्घाटन किया गया यह प्रदर्शनी 31 मार्च, 2006 तक चली। इसने नौका बनाने की अतुलनीय कला एवं इसका इतिहास तथा उन व्यक्तियों को रेखांकित किया जिनका जीवन नौकाओं के चारों ओर घूमता है। बनाने की विधि, उपयोगिता, गुजरते हुए समय के साथ इन व्यक्तियों तथा कलाओं द्वारा सामना किए गए समय की ललकार, नए यंत्रों का प्रभाव तथा पुरानी कुशलता के साथ इसके अनुकुलन को चित्रित किया है। इसमें नौका कौशल को परिपूर्ण करते हुए मल्लाहों को समर्पित उनकी भावनाओं का वर्णन करते हुए, क्षेत्रीय गीतों एवं कविताओं का भी आयोजन किया गया था।

गोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ

नेशनल कन्वेशन ऑफ नोमेड्स एण्ड आदिवासीज़ विषय पर एक राष्ट्रीय सभा : 21 से 24 अप्रैल, 2006 तक भाषा रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन सेण्टर, बड़ोदा के सहयोग से बंजारों एवं आदिवासियों पर एक राष्ट्रीय सभा का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा संस्कृति मंत्री श्री जयपाल रेड्डी ने 21 अप्रैल को किया । इस सभा में पूरे देश से लगभग 1500 बंजारों एवं आदिवासियों ने भाग लिया। सभा के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

निम्नलिखित प्रकरणों पर छः कार्यशालाएँ आयोजित की गई-

संस्कृति एवं पहचान भाषा, साहित्य एवं कलाएँ ; 2. वन, खेत एवं प्राकृतिक निवास स्थान ; 3. प्राकृतिक साधन एवं अधिकार, पैदावार तथा उनकी खरीद-बिक्री ; 4. प्रवर्जन तथा विस्थापन ; 5. साक्षरता, शिक्षा एवं मौखिक इतिहास; 6. स्त्री एवं शिशु, स्वास्थ्य एवं अवस्था । हर प्रकरण के दो सत्र थे ।

सभा के दौरान, न्यायमूर्ति (अवकाश प्राप्त) श्री एम०एन० वेंकट चालैया, श्री अशोक चौधरी, श्री बी०डी०शर्मा, श्रीमती मेधा पाटकर, श्री बालकृष्ण रिनाके, श्री रामचन्द्र गुहा, श्री प्रदीप प्रभु, डॉ० जी०एन०देवी, श्री आत्माराम राथौड़, श्री भगवान दास पटेल एवं डॉ०कल्याण कुमार चक्रवर्ती द्वारा आदिवासियों तथा देशी जातियों की संस्कृति, समस्याओं एवं उनके अधिकारों पर व्याख्यान दिए गए।

'प्रदर्शन' : लगभग 80 बंजारों एवं आदिवासियों ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रांगण में एक साथ चल रहे पाँच मंचों पर नृत्य,संगीत एवं ड्रामा का प्रदर्शन किया ।

'प्रदर्शनी' : 21 से 25 अप्रैल, 2005 तक भारत के कपड़ों, कौशल, चित्रकला, मिट्टी के पात्र, फोटोग्राफ एवं पुस्तकों तथा भाषाओं पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह प्रदर्शनी विभिन्न जन जातियों के जीवन्त कौशल प्रदर्शन से परिपूर्ण थी ।

आई०जी०एन०सी०ए० इस अवसर से इस प्रकार लाभान्वित हुआ कि इससे इन समुदायों की जीवन शैलियों तथा वैश्विकरण का सामना करने में इनकी चुनौतियों के बारे में गहन यथार्थ की सूचना इसे मिली। आई०जी०एन०सी०ए०ने अपने साँस्कृतिक अभिलेखागार के लिए बंजारों था आदिवासियों के नृत्य, संगीत, कौशल एवं साक्षाकारों के विशाल प्रलेखन अर्जित किए।

2. 'बेल मेटल कलाकारों के साथ कार्यशाला' जुलाई 2005 में झारा समुदाय के कलाकारों के साथ जो रायगढ़, छत्तीसगढ़ के बेल मेटल में कार्य कर रहे है, आई०जी०एन०सी०ए० में एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था समस्त भारत में विभिन्न स्थानीय देवी देवताओं के विषय में जानना क्योंकि वे ही स्थानीय समुदायों की प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड के साथ निकटता का प्रतीक हैं। कार्यशाला में इक्कीस बहिनी की ब्रास की मूर्त्तियाँ बनाईं जो उन सब का प्रतिनिधित्व कर रही थी।

3. भारत रत्न (स्वर्गीय) श्रीमती एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी को श्रद्धांजलि- 3 एवं 4 मार्च को भार रत्न (स्वर्गीय) अर्पित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। 3 मार्च को संगीत कलानिधि एवं ष्ठ मृदंग कलाकार श्री टी०के०मूर्त्ति जो श्रीमती सूब्बुलक्ष्मी के संगीत कार्यक्रमों में साथ रहते थे को बधाई दी गई। इस अवसर पर एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी के शिष्य श्री गौरी रामनारायण द्वारा, न संगीतज्ञ पर एक प्रस्तुतीकरण भी किया गया। इसके तुरन्त पश्चात् बैंगलोर के गायिका सौम्या , जो श्रीमती एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी की गायन शैली को आगे बढ़ा रहीं हैं, कर्नाटक गायन कार्य म प्रस्तुत किया गया। कुमारी शुभा मुद्गल ने हिन्दुस्तानी शैली में भजन प्रस्तुत किए।

4 मार्च को चिन्नई के राधा वेंकटाचलम् तथा बैंगलोर के कर्नाटिक बन्धुओं द्वारा कर्नाटक ग न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आन्ध्र प्रदेश की कुमारी नित्या वेंकटश्वरन ने उक्त विषय पर नृत्य प्र त किया।

सार्वजनिक व्याख्यान

1. 6 सितम्बर, 2005 को डॉ० मार्गेट फ्रांज़ ने **ए जर्नी थ्रु ऑस्ट्रिया-इण्डिया रिलेशन्स** शीर्षक वार्ता। डॉ० फ्रांज़ ने आस्ट्रिया में साहित्य, वास्तुकला, डाक्टरों तथा दार्शनिकों को सेवाएँ के क्षेत्र भारत के योगदान को तथा कुछ भारतीय परिवारों को जिन्होंने आस्ट्रिया वासियों को धर्म त संस्कारों की ओर अग्रसर किया, उजागर किया।

2. 8 सितम्बर, 2005 को डॉ० ज़्मागो स्मिटेक ने **स्लोवेनियन मिथ्स ऑन इण्डिया** शीर्षक व्याख्यान दिया । अपने व्याख्यान में उन संभ्रमों को उजागर किया जो भारत के प्रति स्लोवेनिया में क्योंकि अधिकतर स्लोवेनिया वासियों ने भारत की यात्रा नहीं की । वहाँ भारत के बारे में कोई खा ज्ञान नहीं था। भारत में चल रहे विश्वासों एवं धार्मिक पद्धतियाँ जिन्हें स्लोवेनिया में गलत ढंग बतलाया या समझा गया था, के बारे में उन भारतीयों द्वारा जिन्होंने स्लोवेनिया की यात्रा की , बाद ठीक किया गया।

3. इंगलैंड से आए दो वरिष्ठ रंगकर्मियों अड्रियॉन लेस्टर तथा लोलिता चक्रवर्त्ती ने **थिएटर इ इंगलैंड : ए क्रास कल्चरल कनवर्शेसन** विषय पर श्रोताओं से बात की। दिल्ली के एक प्रसि रंगकर्मी प्रो० ने कार्यक्रम का संचालन किया।

4. 29 दिसम्बर, 2005 को स्कूल ऑफ इंगलिश एण्ड ड्रामा, यूनीवर्सिटी ऑफ लंडन के अंग्रेजी के प्राध्यापक प्रो० पॉल हैमिल्टन ने **क्रिटिकल थियरी** शीर्षक पर परिचर्चा की । दिल्ली विश्वविद्याल के अंग्रेजी के भूतपूर्व प्राध्यापक प्रो० आर डब्ल्यु देसाई ने व्याख्यान का सभापतित्व किया।

स्मारकीय व्याख्यान

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान : इस शृंखला में, 19 अगस्त, 2005 को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 23 वाँ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस वर्ष उत्तर-पूर्व के जाने-माने समाज शास्त्री प्रो० सत्य मित्र दूबे ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : इतिहास, परम्परा और आधुनिकता शीर्षक पर व्याख्यान दिया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक निदेशक तथा साहित्य अकादमी के भूतपूर्व सचिव प्रो० इन्द्र नाथ चौधुरी ने व्याख्यान की अध्यक्षता की।

पुस्तक विमोचन समारोह

14 दिसम्बर, 2005 को डॉ० कर्ण सिंह सभापति, आई०सी०सी०आर० तथा संसद सदस्य ने एम वीरप्पा मोयली के रामायण महान्वेश्रणम के हिन्दी अनुवाद के प्रथम खण्ड का विमोचन किया। डॉ० प्रधान गुरुदत्त ने इसका कन्नड़ से हिन्दी में अनुवाद किया। इस पुस्तक को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने राजकमल प्रकाशन के साथ मिलकर प्रकाशित किया। इस अवसर पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त एवं आधुनिक भारतीय भाषा प्रभाग की प्राध्यापिका प्रो० इन्दिरा गोस्वामी मुख्य अतिथि थीं।

विदेशी प्रतिनिधिमण्डल का आगमन

1. 10 जून को चीन के गांसू प्रान्त के उप-राज्यपाल श्री ली दिंग के नेतृत्व में पाँच सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दौरा किया एवं एक प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी आयोजित करने की संभावनाओं पर विचार विमर्श किया।
2. 27 दिसम्बर, 2005 को कोरियन नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट्स को चार सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने उप-अधिकारी योय जुन्हो के नेतृत्व में, ड्रामा प्रोफेसर किम सुकमान, डॉ० सिम योंगतार एवं मैनेजर एकेडमिक अफेयर्स के साथ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दौरा किया तथा कोरिया में भारतीय साँस्कृतिक कलाकारों के लिए कार्यक्रम आयोजित करने तथा कोरियन नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट्स के शोध कार्यों के परिचय कराने की संभावनाओं पर विचार किया।

सूत्रधार

कार्मिक

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची अनुबन्ध में दी गई है।

सेवा एवं आपूर्ति विभाग

यह प्रभाग समूचे कार्यालय के साजोसमान एवं फर्नीचर की मरम्मत एवं रख-रखाव का उत्तरदायी है। इसमें आतिथ्य, लेखा-सामग्री वितरण, परिवहन , सीजीएचएस एवं कार्यालय के अन्य रख-रखाव के कार्यों के लिए विभिन्न अनुभाग हैं।

भवन परियोजना कमेटी

सरकार ने वर्ष 1985 में इ गा रा क केन्द्र के स्थायी भवन संकुल निर्माण के लिए 100 करोड़ की पूंजी परिव्यय का अनुमोदन प्रदान किया और साथ ही नई दिल्ली के सेन्ट्रल विस्टा क्षेत्र में स्थित 24,70 एकड़ भूमि इ गा रा क केन्द्र को आंबटित की।

संकुल की संरचना निम्न आठ भवनों के सुघटित एकबद्ध समूह पर आधारित है:- (1) कलानिधि कलाकोश एवं सम्मिलित संसाधन **क** (2) सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग खण्ड बी, आवासीय खण्ड जिसमें तीन प्रदर्शनी दीर्घाएँ सम्मिलित हैं (4) कॉन्सर्ट हाल(2000 व्यक्तियों के लिए) (5) भारतीय रंगशाला (400 व्यक्तियों के लिए) एवं (6)राष्ट्रीय रंगशाला (1200 व्यक्तियों के लिए)। एक मुक्त रंगशाला भी प्रस्तावित है। इ गा रा क केन्द्र की भवन परियोजना अनेक व्यवधानों एवं कठिनाइयों को पार कर के अंततः फलवती हुई और इसके प्रथम भवन-कलानिधि, कलाकोश, सम्मिलित संसाधन **क** का उद्घाटन भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री द्वारा 19 नवम्बर 2001 को सम्पन्न हुआ।

कलानिधि (भवन-1) के पश्चात् , दूसरे भवन (भवन-2) का कार्य प्रारम्भ किया गया। इसका भौतिक निर्माण कार्य जून, 1999 को आरम्भ हुआ, परन्तु नींव के स्तर पर ही धन न मिलने के कारण कार्य को दो वर्ष के लिए स्थगित करना पड़ा। इस स्थिति में बनी हुई नींव को सुरक्षित रखने के लिए, जमीन के नीचे के पानी को निकालने के लिए रात दिन पम्प चलाना पड़ा, जिससे एक निष्फल व्यय हुआ।

इस गतव्यरोध को तोड़ने के लिए इ गा रा क केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति ने अप्रैल 2002 को हुई अपनी 26वीं बैठक में चार सदस्यों की उच्चस्तरीय समिति का गठन किया , जो इ गा रा क केन्द्र भवन परियोजना से सम्बन्धित सभी तथ्यों को देखेगी और कार्यकारिणी समिति/न्यास को सलाह देगी। उप-समिति ने भुगतान, दावा एवं ठेकेदारों द्वारा न्यायालय में जाने की धमकियों से सम्बन्धित सभी तथ्यों पर विचार-विमर्श किया और यह निश्चय किया कि ठेके के अनुसार जो कार्य पूर्ण हो चुका है, उसका भुगतान तुरंत कर दिया जाए। इस समिति ने यह भी निर्णय लिया कि **जैसा है जहाँ है** के आधार पर सभी कार्यों को वही रोक दिया जाए , केवल अत्यावश्यक संविदाओं को पूर्ण

किया जाए जिससे भवन को उपयोग में लाया जा सके। इस तरह 51 सविदाओं में से लगभग 46 को बंद कर दिया गया है। इस बीच खर्चे में कटौती के लिए और भी कदम उठाए गए जैसे नई भवन परियोजना एकक से जुड़े कर्मचारियों की संख्या में कटौती एवं टी०पी०एल०-कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट एजेंसी को खत्म करना। हालांकि भारत सरकार से अतिरिक्त धन प्राप्ति के लिए प्रयत्न जारी है ताकि अन्य भवनों जैसे राष्ट्रीय रंगशाला एवं संग्रहालय इत्यादि के भवन निर्माण का कार्य शुरु किया जा सके।

समन्वयन

अन्य देशों से आने-वाले प्रतिनिधि मंडलों तथा विद्वानों के लिए यह प्रभाग सी०ई०पी० का कार्य भी देखता है तथा मंत्रालय से समन्वय स्थापित करता है।

सूत्रधार में दो अध्येतावृत्ति कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं- इन्दिरा गाँधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति तथा लघु अवधिक अध्येतावृत्ति।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र- दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र बैंगलौर

भारत के दक्षिण प्रान्तों के क्षेत्र अध्ययनों में अनुसन्धान एवं विद्वता को बढ़ाने हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना वर्ष 2001 में की गई।

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र ने मंदिरों के त्यौहार, धार्मिक क्रियाएँ, वास्तुकला, रंगमंच, लोक एवं जनजाति कलाओं से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों को किया ।

गत वर्ष कर्नाटक में टेम्पल फस्टिवल एण्ड रिचुअल्स प्रोग्राम के अन्तर्गत मेलकोटे के मंदिरों के विभिन्न त्यौहारों को दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र में प्रलेखित किया गया । इस भाग के द्वितीय चरण में प्रकाशन किया जा रहा है। एक संपादित सीडी रोम प्रकाशन के साथ निकलेगी।

टेम्पल आर्किटेक्चर इन साऊथ इंडिया कार्यक्रम के अन्तर्गत दक्षिण भारत के मुख्य तीन राजवंशों द्वारा भगवान् शिव को समर्पित मुख्य तीन मंदिरों के अनुसन्धान एवं फोटो प्रलेखन का दायित्व लिया गया। वे हैं:-

कैलाशनाथ मन्दिर - कांचीपुरम (पल्लव 715-746 ईस्वी) विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल (विश्व दाय स्मारक) चालुक्य 733-745 ईस्वी) एवं कैलाश टेम्पल, एलोरा (विश्वदाय स्मारक) (राष्ट्रकुट 756-773 ईस्वी) एवं मंदिरों के फोटो प्रलेखन का सम्पन्न हो चुका है एवं कैटलॉग का कार्य किया जा रहा है।

तमिलनाडु के चुनिन्दा भित्ति चित्र स्थलों का सर्वेक्षण, प्रलेखन एवं अध्ययन:-

इस परियोजना के अन्तर्गत दक्षिण भारत चार प्रान्तों में चुनिंदा स्थलों के भित्ति चित्रों का प्रलेखन कार्य चल रहा है। फेज -I में प्रलेखित स्थल हैं: वदराज पेरुमल मंदिर-कांचीपुरम (विजयनगर -16 वीं शताब्दी), कैलाशनाथ मंदिर- कांचीपुरम (पल्लव-8वीं शताब्दी के आरम्भ में) त्रिलोकनाथ मंदिर-कांचीपुरम (विजयनगर-14वीं से 16वीं शताब्दी) सित्तन्नवासल गुफा मंदिर-पुडुकोटै (पांड्य-9वीं शताब्दी) विजयालय चोलीश्वर मंदिर नार्थमलाई-पुडुकोटै (13वीं शताब्दी), रामलिंगविलासम प्रासाद-रामनाथपुरम (नायक 18वीं शताब्दी)। डिजिटाइज़ेशन के उपरान्त प्रलेखन कार्य गत वर्ष पूरा किया गया, प्रकाशन हेतु पाण्डुलिपि तैयार की जा रही है।

इ०गा०रा०क०केन्द्र दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र ने कर्नाटक सरकार के कन्नड़ एवं संस्कृति निदेशालय के सहयोग से वैनिशिंग फोक ट्रेडिशन्स विषय पर प्रलेखन शुरू किया। अब तक 4 प्रलेखन किए जा चुके हैं।

13 नवम्बर, 2005 को चेन्नई में **द नेशनल वीणा फेस्टिवल** एवं 13 से 21 नवम्बर, 2005 से बैंगलौर में **महाभारत फेस्टिवल** का आयोजन साक्षात्कार एवं सार-संक्षेप के साथ पूरा हुआ।

वाराणसी कार्यालय

आलोच्य वर्ष में कलातत्त्वकोश (खण्ड छ:) के आठ लेखों का अंतिम सम्पादन प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य एवं प्रो० पी०के०अग्रवाल के मार्गदर्शन में आन्तरिक एवं बाहरी सदस्यों की सहायता से यह कार्य पूरा हुआ।

संदर्भ कार्ड

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी कार्यालय का प्रमुख कार्य संदर्भ कार्ड बनाना है। इस वर्ष दिल्ली स्थित कार्यालय में 3408 टाईप्ड कार्ड्स भेजे गए। पिछले वर्ष के कार्डों का रिकॉर्ड अद्यतित एवं पाठ्यानुसार सूचीबद्ध किया गया । अब वाराणसी कार्यालय के 44,724 संदर्भ कार्ड्स हैं।

सम्पादन

ग्लॉसरी ऑफ की आर्ट टर्म्स (नई परियोजना) पर डॉ० एस चट्टोपाध्याय एवं डॉ० एन०सी० पाण्डा ने कार्य प्रारम्भ किया । हर शब्द के लिए मुख्यत: चार उप-शीर्षक लिए गए 1. व्युत्पत्ति 2. अर्थक्षेत्र 3. भारोपीय समानार्थक 4. समीक्षा।

व्याख्यान

21 जुलाई, 2005 को कलाकोश के प्रतिष्ठा दिवस, गुरुपूर्णिमा के अवसर पर इ०गा०रा०क०केन्द्र के भूतपर्व समन्वायक प्रो० आर०सी०शर्मा ने सम इम्पोर्टेन्ट इन्सक्रिप्शन्स फ्रॉम मथुरा पर एक व्याख्यान दिया। प्रो० युगलकिशोर मिश्र और प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य अध्यक्ष थे।

प्रो० भवानी लाल भरतीया ने 17 नवम्बर, 2005 को वेद विषय पर एक व्याख्यान दिया। इसकी अध्यक्षता एम०जी०काशीविद्यापीठ के प्रो० अमरनाथ पाण्डेय ने की।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
न्यासी मण्डल (31.3.2006)

1. श्रीमती अम्बिका सोनी
   पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001

2. डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन
   85, एस०एफ०एस०,डी०डी०ए० फ्लैट
   गुलमोहर एन्केलव,
   नई दिल्ली- 110 049

3. श्री जयपाल रेड्डी
   संसदीय कार्य एवं शहरी विकास मंत्रालय
   माननीय शहरी विकास मंत्री
   निर्माण भवन, नई दिल्ली-110 001

4. डॉ० कर्णसिंह
   3, नया मार्ग
   चाणक्यपुरी
   नई दिल्ली-110 021

5. श्री रामनिवास मिर्धा
   डी-39, प्रथम तल
   आनन्द निकेतन
   नई दिल्ली-110 021

6. श्री रत्न एन०टाटा
   अध्यक्ष, टाटा सन्स लिमिटेड
   बोम्बे हाउस, गली, 24 होमी मोडी
   मुम्बई 400 001

7. श्री मृणाल सेन
   मकान नं० 4 एन
   38, पदमा पुकुर रोड़
   शिवांगी आपार्टमैंट
   कोलकत्ता-700 020

8. श्री अदूर गोपालकृष्ण
दर्शनम्
तिरुवनन्तपुरम
केरल-695 017

9. श्री सलमान हैदर
ए-3, प्रथम तल
पूर्वी निजामुद्दीन
नई दिल्ली-110 013

10. उस्ताद अमजद अली खान
3, साधना एन्केलव
पंचशील पार्क
नई दिल्ली- 110 017

11. डॉ० रोदम नरसिम्हा
अध्यक्ष,
इंजिनियर मैकेनिकल यूनिट
जवाहरलाल नेहरु अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
जाकुर पी०ओ०, बैंगलोर 560 064

12. प्रो० ए० रामचन्द्रन
22, भारती कालोनी
विकास मार्ग,
नई दिल्ली 110 092

13. डॉ०कल्याण कुमार चक्रवर्ती
(आई०ए०एस०)
सदस्य-सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र

अनुबन्ध - 2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द की कार्यकारिणी समिति के सदस्य (31.3.2006)

1. डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन
   85, एस०एफ०एस०, डी०डी०ए० फ्लैट
   गुलमोहर एन्केलव,
   नई दिल्ली- 110 049

2. डॉ० कर्णसिंह
   3, नया मार्ग
   चाणक्यपुरी
   नई दिल्ली-110 021

3. श्री रामनिवास मिर्धा
   डी-39, प्रथम तल
   आनन्द निकेतन
   नई दिल्ली-110 021

4. डॉ० रोदम नरसिम्हा
   अध्यक्ष,
   इंजिनियर मैकेनिकल यूनिट
   जवाहरलाल नेहरु अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
   जाकुर पी०ओ०, बैंगलोर- 560 064

5. प्रो० ए० रामचन्द्रन
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग,
   नई दिल्ली 110 092

6. डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती
   (आई०ए०एस०)
   सदस्य-सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों तथा वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची
(31.3.2006 तक)

डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती	सदस्य सचिव
सदस्य सचिव का सचिवालय	अवर सचिव
श्री जॉय कुरियाकोस	

कलानिधि

1.	डॉ० आर०सी० गौड़	
2.	श्री आर० भरताद्रि	कार्यक्रम निदेशक मीडिया प्रोडक्शन (इ गा रा क केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर आगत)
3.	डॉ० गौतम चटर्जी	रिसर्च एसोशिएट एवं लेखक
4.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
5.	श्री प्रमोद किशन	रिप्रोग्राफी अधिकारी
6.	श्री दिलीप कुमार राणा	अनुसंधान अधिकारी (राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन में सहायक निदेशक पद पर प्रतिनियुक्त)

कलाकोश

1.	प्रो० जी०सी०त्रिपाठी	प्रो० एवं विभागाध्यक्ष, कलाकोश
2.	डॉ० मधु खन्ना	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	डॉ० एन०डी०शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर
4.	डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
5.	डॉ० राधा बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ० वी०एस० शुक्ल	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
7.	डॉ० बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
8.	डॉ० कीर्त्तिकान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी

वाराणसी कार्यालय

1.	डॉ० सुकुमार चटोपाध्याय	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
2.	डॉ० एन०सी०पाण्डेय	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
3.	डॉ० उर्मिल शर्मा	सलाहकार (शैक्षणिक)

जनपद-सम्पदा

1.	डॉ० मौली कौशल	एसोशिएट प्रोफेसर
2.	श्री टी० राजगोपालन	उप-सचिव
3.	डॉ० बंसीलाल मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ० रमाकर पन्त	अनुसंधान अधिकारी

कलादर्शन

1.	प्रो० इन्द्रनाथ चौधुरी	शैक्षणिक निदेशक, प्रो०एवं विभागाध्यक्ष, कलादर्शन
2.	श्रीमती सबीहा ज़ैदी	कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार

1.	श्री पी०झा	निदेशक (एम०एम०)
2.	श्री जी० कृष्णमूर्त्ति	मुख्यलेखाधिकारी
3.	श्री आर० सी० सहोत्रा	प्रधान निजी सचिव
4.	श्री टी० एलोशियस	अवर सचिव
5.	श्री रवि कान्त गुप्त	अवर सचिव
3.	श्रीमती सुधा गोपालाकृष्णण	एसोशिएट प्रोफेसर (निदेशक रा.पा.मिशन)
4.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखाधिकारी
5.	श्रीमती मंगलम् स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र , बैंगलोर

1.	डॉ० रोदम नरसिम्हा	अवैतनिक समन्वायक
2.	प्रो० एस०सेतार	अवैतनिक समन्वायक
3.	डॉ० चूडामणि नन्दगोपाल	एसोशिएट प्रोफेसर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी शाखा कार्यालय में वरिष्ठ अनुसंधान सहायक

कलाकोश प्रभाग

डॉ० सुजाता रेड्डी	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता

वाराणसी शाखा

डॉ० पार्वती बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता
डॉ० रमा दुबे	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

क्षेत्रीय केन्द्र , बैंगलोर

1. डॉ० प्रॅमिला लोचन	अनुसंधान सहायक
2. श्रीमतां खुराना विजेन्द्रा	अनुसंधान सहायक

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना जी०ओ०एम०एल०, चेन्नई)

1. श्री जे० मोहन	अनुसंधान अध्येता
2. श्री पी०पी०श्रीधर उपाध्याय	अनुसंधान अध्येता
3. श्रीमती पार्वतम	अनुसंधान अध्येता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना आर०ओ०आर०आई, अलवर)

1. डॉ० (श्रीमती) रमा शर्मा	अनुसंधान अध्येता

वर्ष 2005-2006 के प्रकाशनों की सूची

1. चतुर्दण्डीप्रकाशिका - प्रो० आर०सत्यनारायण
2. ऋत : द कॉस्मिक आर्डर - डॉ० मधु खन्ना
3. बनारसी दास चतुर्वेदी के पत्र - श्री नारायण दत्त
4. मुगल एण्ड पर्शियन पेंटिंग्स एण्ड इलेस्ट्रेटिड मैन्युस्क्रिप्ट्स- बार्बरा शिमट्ज़ आदि
5. ए पैशन फॉर फ्रीडम - दीप्ति प्रिया मेहरोत्रा
6. रामायण महान्वेषणम्- श्री एम विरप्पन मोइली।

सीडी रोम

अजन्ता : एन इन्टरएक्टिव मल्टीमीडिया एण्ड वर्चुअल वाकथ्रू सीडी रोम